विषय-सूची

पहला खंड

मौखिक रचना

विषय

दूसरा खंड

लिखित रचना

भूमिका

यह रचना पुस्तक उत्तर-प्रदेश की मध्य कक्षाओं के उपयोग के लिये लिखी गई है। इसमें रचना-विषय के भिन्न-भिन्न विभागों के अनेक क्रम-बद्ध उदाहरण देकर इस बात का प्रयत्न किया गया है कि यह एक ही पुस्तक पाँचवीं कक्षा से आठवीं कक्षा तक उपयोगी हो सके। प्रत्येक अध्याय के अन्त में जो अभ्यास दिये गये हैं, वे भी इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये हैं। इस पुस्तक की विशेषता यह भी है कि प्रत्येक विभाग के उदाहरणों के साथ उसकी शिक्षा की रीति भी लिख दी गई है जिससे शिक्षक लोग अपनी शिक्षा-पद्धति निश्चित और उन्नत कर सकें।

उत्तर-प्रदेश के शिक्षा-संघ की ओर से रचना-विषय का जो पाठ्य-क्रम निर्धारित किया गया है उसी के अनुसार इस पुस्तक में विषय-विभाग किये गये हैं और उन्हें कठिनाई के क्रम से स्थान दिया गया है। पूर्वोक्त पाठ्य-क्रम में विचारात्मक निबंधों का समावेश न होने पर भी उपयोगिता की दृष्टि से यह विषय-खंड पुस्तक में सम्मिलित कर दिया गया है। अंतिम अध्याय में विशेष प्रकार के पत्रों के नमूने दे दिये गये हैं, जिनका समावेश दूसरे प्रकार की रचनाओं में नहीं किया जा सका।

इस पुस्तक में रचना-विषय को अनेक उदाहरणों द्वारा सिखाने की चेष्टा की गई है; क्योंकि यह एक कला है जो अनु-करण और अभ्यास से ही सीखी जा सकती है। इसी विचार से भिन्न-भिन्न प्रकार के अनेक अभ्यास भी दिये गये हैं। पुस्तक की भाषा यथासंभव सरल, स्पष्ट और व्याकरण सम्मत रक्खी गई है। बहुधा देखा गया है कि रचना की उपलब्ध पुस्तकों में प्रायः

वे ही भूलें पाई जाती हैं जिनसे लेखक विद्यार्थियों को बचाना चाहते हैं।

उत्तर प्रदेश में प्रचलित इस विषय की जो पुस्तकें मेरे देखने में आई हैं उनमें शिक्षा-विभाग के द्वारा निर्धारित पाठ्य-क्रम का पूर्णतया अनुसरण नहीं किया गया। किसी में कम और किसी में अधिक विषय रक्खे गये। किसी-किसी पुस्तक में तो कई एक अनावश्यक विषय भी मिला दिये गये हैं।

आशा है, यह पुस्तक उत्तर प्रदेश के विद्यार्थियों और शिक्षकों को समान रूप से उपयोगी होगी। अन्य हिन्दी-भाषी प्रदेशों में भी सम्भवतः यह पुस्तक उपयोगी हो सकती है।

जबलपुर
जन्माष्टमी
१९८७ } कामताप्रसाद गुरु

मध्य हिन्दी रचना

पहला खंड

मौखिक रचना

पहला परिच्छेद

कहानी कहना

(क) कहानी का उदाहरण

लोभी बाघ

किसी बाघ ने एक खरहे को झाड़ी में सोता हुआ देखा। वह उसके पास जाकर उसे पकड़ने वाला ही था कि इतने में एक बारहसिंगा उसके पास से निकला। तब बाघ ने खरहे को छोड़ दिया और बारहसिंगे का पीछा किया। उन दोनों के दौड़ने की आवाज से खरहे की नींद खुल गई और वह बाघ से अपने प्राण बचाकर भागा।

इधर बारहसिंगा बहुत जल्द दौड़कर दूर निकल गया और बाघ उसको न पकड़ सका। तब वह निराश होकर खरहे को खाने के लिए झाड़ी के पास आया। जब बाघ को वहाँ खरहा भी न मिला, तब वह और भी निराश हुआ। वह अपने मन में पछता कर कहने लगा कि मैंने बड़ी मूर्खता की जो मैंने बारह-सिंगे को पकड़ने के लोभ में खरहे को छोड़ दिया।

(ख) कहानी सिखाने के लिये प्रश्न

(१) बाघ ने किसको देखा ? खरहा कहाँ था ? वह क्या कर रहा था ? इतने में वहाँ से कौन निकला ? तब बाघ ने या

किया ? खरहे की नींद कैसे खुल गई ? जागने पर खरहे ने क्या किया ? बाघ बारहसिंगे को क्यों न पकड़ सका ? बाघ झाड़ी के पास क्यों लौट आया ? वह क्यों निराश हुआ ? बाघ ने अपने मन में पछता कर क्या कहा ?

(ग) कहानी सिखाने की रीति

शिक्षक कहानी कहकर (अथवा कभी-कभी पढ़कर) लड़कों को सुनावे; फिर प्रश्नों के द्वारा उनसे कहानी की मुख्य-मुख्य बातें पूछे। लड़के पूरे-पूरे वाक्यों में उत्तर देवें। फिर शिक्षक प्रश्नों को श्याम-पट पर लिख देवे। प्रश्नों को देख-देखकर लड़के पूरी कहानी सुनावें।

अभ्यास (१)

पहले बताई हुई रीति के अनुसार नीचे लिखी कहानियाँ सिखाई जायें—

(१) कुत्ता और उसकी परछाईं

किसी कुत्ते ने एक रोटी चुराई और उसे मुँह में दबाकर एक नाले की ओर भागा। नाले के आर-पार एक तख्ता पड़ा था, जिस पर से वह उस पार जाने लगा। कुछ दूर जाने पर उसे पानी में अपनी परछाईं दीख पड़ी। उसे देखकर कुत्ते ने समझा कि कोई दूसरा कुत्ता रोटी लिये जा रहा है। ऐसा समझ कर वह परछाईं की रोटी छीनने के लिए झपटा और ज्योंही उसने अपना मुँह खोला, त्योंही उसकी निज की रोटी पानी में गिर कर बह गई। तब कुत्ता बहुत पछताया, क्योंकि दूसरी रोटी के लोभ में उसने अपनी ही रोटी खो दी।

(२) बाघ और बिल्ली

किसी पहाड़ पर एक बाघ रहता था। उसकी गुफा के पास

एक बिल में एक चूहा भी रहता था। जब बाघ सो जाता, तब वह चूहा उसकी पूँछ या पंजों के किनारे खुटका करता था। जागने पर जब बाघ चूहे को पकड़ना चाहता, तब वह निकल भागता था। चूहे के कारण बाघ बहुत व्याकुल रहता था। अन्त में उसने चूहे को नष्ट करने का एक उपाय सोचा। वह एक गाँव में गया और मांस का लोभ देकर वहाँ से अपने साथ एक बिल्ली को लाया। बिल्ली गुफा में रहने लगी और खाने को मनमाना मांस मिलने लगा। अब उसके डर से चूहे ने बिल के बाहर आना छोड़ दिया। इससे बाघ का दुःख दूर हो गया और वह सुख से रहने लगा।

बिल में रहते-रहते जब चूहे को कई दिन तक खाने को न मिला, तब एक दिन वह धीरे-धीरे बाहर निकला। बिल्ली ने उसकी आहट पाकर उसे तुरंत देख लिया। तब उसने झपट कर उसे पकड़ लिया और मारकर खा डाला।

चूहे के मारे जाने पर बाघ को अब कोई चिंता न रही इसीलिए उसने बिल्ली को खिलाना छोड़ दिया। जब बिल्ली भूख से निर्बल होने लगी तब उसने गाँव को लौटने का विचार किया। गाँव में जाने पर उसे मालूम हुआ कि गाँव वाले मुझे नहीं रखना चाहते, क्योंकि वहाँ एक दूसरी बिल्ली आ गई। तब तो बिल्ली को बड़ा पछतावा हुआ कि लोभ में पड़कर मैंने दोनों घर खो दिये।

(३) शिकारी और बन्दर

एक शिकारी सँकरे मुँह वाले एक घड़े में कुछ मिठाई डालकर उसे जंगल में रख आया। एक बन्दर ने उस घड़े को देखा। उसके पास आने पर बन्दर को उसमें मिठाई दिखाई पड़ी। उसने घड़े में हाथ डाल कर मिठाई उठा ली और मुट्ठी बाँध ली। अब उसने मुट्ठी बाहर निकालनी चाही, पर वह न निकल सकी। क्योंकि घड़े का मुँह सँकरा था। बन्दर में यह बुद्धि भी न थी कि वह

मुट्ठी खोलकर हाथ से थोड़ी-थोड़ी मिठाई बाहर निकाले। इसलिये वह बहुत समय तक उसी दशा में रहा और अन्त में शिकारी ने आकर उसको पकड़ लिया।

लालच और मूर्खता के कारण वह बन्दर कैद में पड़ गया।

(४) साहसी लड़का

रेल की सड़क पर एक लकड़ी के पुल में अचानक आग लग गई। उस पुल पर रेलगाड़ी निकलने वाली थी पर उसमें आग लगने की खबर किसी को न थी। थोड़ी देर में एक लड़के ने जो पास ही जगल में ढोर चरा रहा था, वह आग देखी और दौड़ता हुआ पुल के पास आया। वहाँ खड़ा होकर वह इधर-उधर देखने लगा। इतने में उसे एक ओर दूर से रेलगाड़ी आती हुई दिखाई पड़ी। तब लड़के ने तुरंत अपनी लाठी में एक कपड़ा बाँधा और रेल की ओर बड़ी तेजी से दौड़ा। कुछ दूर जाकर वह रेल की सड़क पर खड़ा हो गया और अपनी बनाई झंडी हिलाने लगा ज्यों-ही ड्राइवर ने उस झंडी को देखा, त्योंही उसनें रेल खड़ी कर दी। पुल के जलने का समाचार सुनकर ड्राइवर तथा मुसाफिरों ने उस लड़के के साहस और बुद्धि की बहुत बड़ाई की। लड़के को इस बात से बड़ा संतोष हुआ कि उसने हजारों मनुष्यों के प्राण बचाये।

(५) कछुआ और चिड़ीमार

एक दिन किसी चिड़ीमार ने एक कौए को पकड़ा। उस कौए का मित्र एक कछुआ था। उसने अपने मित्र को बंधन में पड़ा हुआ देखकर चिड़ीमार से कहा कि जो तुम कौवे को छोड़ दो, तो मैं तुम्हें एक मोती दूँगा। चिड़ीमार ने कहा कि तुम पहले मोती दो, तब मैं कौए को छोड़ूँगा इस पर कछुए ने तालाब में डुबकी लगाई और एक मोती लाकर चिड़ीमार को दिया। चिड़ीमार ने मोती पाकर भी कौए को न छोड़ा। तब कछुए ने चिड़ीमार से

कौवे को छोड़ने के लिए फिर कहा। इस पर चिड़ीमार ने उससे एक और मोती माँगा। कछुए ने फिर डुबकी लगाली और एक छोटा मोती लाकर उसको दिया। चिड़ीमार ने वह मोती न लिया और कछुए से दूसरा बड़ा मोती माँगा। तब कछुए ने उससे कहा कि तुम पहले कौए को छोड़ दो और बड़ा मोती लौटा दो, तो मैं उसके बराबर एक और मोती ला दूँगा। यह सुनकर चिड़ीमार ने कौए को छोड़ दिया और बड़ा मोती कछुए को दे दिया। कछुवा मोती लेकर पानी के भीतर चला गया और वहीं बैठ रहा। जब बहुत समय हो गया और कछुआ न आया तब चिड़ीमार पछताकर अपने घर चला गया।

(६) सियार और हाथी

किसी वन में एक हाथी अकेला रहता था। उसी वन में बहुत से गीदड़ भी रहते थे। गीदड़ हाथी का मांस खाने के बहुत इच्छुक थे, पर हाथी के डील-डौल और उसकी शक्ति के सामने उनकी कुछ न चलती थी। एक दिन सब गीदड़ मिलकर हाथी को मारने और उसका मांस खाने का उपाय विचारने लगे। उनमें से एक गीदड़ ने कहा कि हाथी को मैं फँसा सकता हूँ। सब ने उसकी बात मान ली। वह गीदड़ हाथी के पास गया और बड़े आदर से उसे प्रणाम किया। हाथी ने पूछा कि भाई तुम कौन हो? गीदड़ ने उत्तर दिया—महाराज! मैं गीदड़ हूँ। जगल के पशुओं ने आपके डील-डौल पर प्रसन्न होकर आपको अपना राजा बनाना विचारा है। उन्होंने मुझे आपके पास इसीलिए भेजा है।

हाथी ने बड़ी प्रसन्नता से कहा कि मैं राजी हूँ। तब गीदड़ ने कहा, तो आप भी चलिए। सब पशु इसी शुभ नक्षत्र में आपको राजा बनाना चाहते हैं। वे सब जंगल में आपकी राह देख रहे हैं। हाथी गीदड़ की बातों में आकर उसके साथ जंगल की ओर चला। गीदड़ आगे-आगे चलकर हाथी को कीचड़ में ले

गया। राजा होने की खुशी में हाथी को कीचड़ की खबर ही न रही और भारी होने के कारण वह कीचड़ में फँस गया। हाथी को कीचड़ में फँसा देखकर गीदड़ अपने साथियों को बुला लाया। उन्होंने उसे नोचना काटना प्रारम्भ कर दिया। बेचारा हाथी कीचड़ में फँसा होने के कारण कुछ न कर सका और छटपटा कर मर गया। तब तो गीदड़ों ने कई दिन तक उसका मांस खाया।

(७) ब्राह्मण और बाघ

किसी वन में एक बाघ रहता था। उसे पकड़ने के लिये गाँव वालों ने फँदा लगाया और एक दिन वह फँदे में फँस गया। कुछ समय के पश्चात् उस वन से एक ब्राह्मण निकला। उसे देखकर बाघ ने उससे कहा कि मुझ पर दया करके मेरा फँदा खोल दो। ब्राह्मण ने उसकी विनती पर ध्यान देकर उसका फँदा खोल दिया। ज्योंही बाघ फँदे से छूटा त्योंही उसने ब्राह्मण से कहा कि मैं भूखा हूँ और तुमको खाना चाहता हूँ। यह सुनते ही वह ब्राह्मण घबड़ा गया। उसने बाघ से कहा कि मैंने तुमको फंदे से छुड़ाया है, इस लिए तुमको मेरे साथ ऐसी बुराई न करनी चाहिये। बाघ ने कहा कि मैं कोई बात नहीं मानता। अन्त में वह ब्राह्मण को खाने वाला ही था कि इतने में वहाँ एक सियार आ पहुँचा।

ब्राह्मण ने उसे अपने दुःख की सब कहानी सुनाई। उससे सुन कर सियार ने ब्राह्मण को बाघ से बचाने का एक उपाय सोचा। उसने ब्राह्मण से कहा कि मुझको इस बात का विश्वास नहीं होता कि तुमने बाघ को फँदे से छुड़ाया है। यह सुनकर ब्राह्मण ने कहा कि यदि बाघ फिर से फंदे में फँसने को राजी हो जाय तो मैं फंदा खोल कर बता सकता हूँ। इस पर बाघ फिर से फंदे में फँसने को राजी हो गया और ब्राह्मण ने उसे जैसे का तैसा बाँध दिया। तब सियार ने ब्राह्मण से कहा कि अब बाघ को इसी तरह फँसा रहने दो और

यहाँ से जल्दी चले जाओ। यह सुनकर ब्राह्मण वहाँ से जल्दी चला गया। फिर सियार भी भाग गया। बाघ यह देखकर बहुत पछताया।

(८) बगुला और कैंकड़ा

किसी तालाब के किनारे एक बगुला रहता था। एक दिन वह वहाँ खड़ा होकर बहाना करके जोर-जोर से रोने लगा। इसके रोने की आवाज सुनकर कैंकड़ा उसके पास आया और रोने का कारण पूँछा। बगुले ने झूठ मूठ कहा—कुछ मछुए जाल डालकर इस तालाब की सब मछलियाँ पकड़ने वाले हैं, इसलिये अब मछलियाँ न मिलने से मैं भूखों मरूँगा। यह सुनकर कैंकड़े को भी चिंता हुई क्योंकि वह भी मछलियाँ खाता था। उसने जाकर यह समाचार मछलियों को सुनाया। मछलियाँ भी इस समाचार से व्याकुल हुईं क्योंकि उन्हें अपने मारे जाने का डर हुआ। तब कैंकड़ा सब मछलियों के साथ बगुले के पास आया और उससे सब की रक्षा का उपाय पूछा। बगुले ने कहा कि जो तुम सब चाहो तो मैं एक एक को अपनी चोंच में दबाकर किसी दूसरे तालाब में पहुँचा सकता हूँ। सब मछलियाँ इस बात पर राजी हो गईं और बगुला उनको एक-एक करके ले जाने लगा। कई एक मछलियों को ले जाने के बाद उसने आकर कहा कि अब बाकी मछलियों को मैं कल ले जाऊँगा।

वह बगुला उन मछलियों को दूसरे तालाब में नहीं ले जाता था किन्तु कुछ दूर जाकर खा लेता था। दूसरे दिन कैंकड़े ने बगुले से कहा कि आज मैं चलना चाहता हूँ। बगुला इस बात पर राजी हो गया, क्योंकि वह कैंकड़े को भी खाना चाहता था। उसने कहा कि मैं तुम्हें भारी होने के कारण अपनी चोंच में दबाकर नहीं ले जा सकता, इसलिये तुम मेरी पीठ पर बैठकर मेरी गर्दन पकड़ लो। कैंकड़े ने वैसा ही किया और बगुला उसे लेकर उसी स्थान को गया जहाँ पहले दिन उसने मछलियों को

खाया था। केंकड़े ने वहाँ उनकी हड्डियाँ देखकर बगुले का कपट जान लिया। उसने बगुले की गर्दन इतने जोर से दबाई कि उसकी साँस रुँध गई।

(९) रंगा हुआ सियार

किसी दिन एक भूखा सियार आहार पाने की आशा से शहर में आया। वहाँ अचानक किसी रंगरेज के नील की नाँद में गिर पड़ा। जब वह उसमें से बाहर निकला, तब अपनी रँगी हुई देह देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि अब मैं जंगल का राजा बन जाऊँगा। अपने खाने के लिए जंगली जानवरों से अच्छी-अच्छी चीजें मँगाऊँगा। ऐसा सोचकर वह जंगल को लौट गया और सब जानवरों को बुलाकर उनसे कहा कि मैं तुम सब का राजा हूँ। उसका रंग देखकर कोई उसे न पहचान सका और सब जानवरों ने उसको अपना राजा मान लिया। तब उस सियार ने बड़े-बड़े पशुओं को अपनी नौकरी में रक्खा, पर अपनी जाति वालों को कोई काम न दिया। इससे वे लोग इस रँगे हुये सियार से जलने लगे और उससे बदला लेने का मौका ढूँढ़ने लगे। जंगल के दूसरे जानवर राजा की आज्ञा से सियारों को पकड़-पकड़ कर मारने और खाने लगे।

एक दिन सब सियारों ने मिलकर सलाह की कि इस रँगे हुए राजा की जाति का पता लगाना चाहिये। ऐसा विचार कर ये सब राजा के पास गये और वहाँ हुआने लगे। उनकी आवाज सुनकर रँगा हुआ सियार भी अपने स्वभाव के कारण हुआने लगा। इससे सब जानवरों ने उसे पहचान लिया और सबने मिलकर उसे मार डाला।

(१०) कंजूस की दुर्दशा

एक कंजूस के पास बहुत धन था, पर वह उसे अच्छे भोजन और वस्त्रों में भी खर्च न करता था। एक बार उसको एक नारियल की जरूरत हुई, उसे लेने के लिये वह बाजार को गया। वहाँ दूकानदार ने नारियल का मोल दो आने बताया। इस पर

कंजूस ने उसे एक आने में माँगा। तब दूकानदार बोला कि एक आने का नारियल बम्बई में मिलता है। यह सुनकर वह कंजूस बम्बई पैदल गया। वहाँ उसे मालूम हुआ कि नारियल बम्बई में तो एक आने को मिलता है, पर सूरत में दो पैसे को। तब वह बम्बई से चलकर सूरत पहुँचा। वहाँ उसने दूकानदारों से पूछा कि क्या इस जगह कहीं एक पैसे में नारियल मिलता है। उन्होंने कहा कि शहर के बाहर एक बगीचे में एक पैसे का नारियल मिलता है। इस पर वह कंजूस उस बगीचे में गया। वहाँ माली ने उससे कहा कि अगर तुम मुझसे नारियल लोगे तो एक पैसा देना पड़ेगा और अगर खुद पेड़ से तोड़ोगे तो कुछ न लगेगा। यह सुनकर कंजूस माली से पूछकर फल तोड़ने के लिये पेड़ पर चढ़ गया। पहुँचते ही अचानक उसका पैर फिसल पड़ा और वह एक डठल के सहारे लटक गया।

इतने में एक ऊँट वाला ऊँट पर चढ़ा हुआ उधर से निकला। उसे देखकर कंजूस ने कहा कि अगर तुम मुझे उतार लो, तो मैं तुम्हें १ लाख रुपया दूँगा। ऊँट वाले ने खड़े होकर ज्योंही कंजूस के पाँव पकड़े त्योंही ऊँट आगे चला गया और ऊँट वाला कंजूस के पैर पकड़ कर लटका रहा। इस दशा में उसने कंजूस से कहा कि तुम डंठल को पकड़े रहना और इसके लिये मैं तुम्हें एक हजार रुपये दूँगा। कंजूस इस बात पर राजी हो गया और उसी तरह लटका रहा।

इतने में वहाँ एक आदमी घोड़े पर बैठा हुआ आया। उससे उन दोनों ने कहा कि अगर तुम हम लोगों को बचा लोगे तो हम दोनों तुम्हें दो हजार रुपये देंगे। वह सवार हिसाब नहीं जानता था, इसलिये उसने पूछा कि दो हजार रुपये कितने होते हैं। यह सुनकर कंजूस ने दोनों हाथ फैलाकर कहा—इतने। यह कहते ही कंजूस और ऊँट वाला एक साथ धरती पर धड़ाक से गिरे और दोनों को भारी चोट आई। अन्त में ऊँट वाला तो अपने घर जाकर अच्छा हो गया, पर कंजूस परदेश में और भी बीमार होकर मर गया।

दूसरा परिच्छेद

(क) कहानी दुहराना

राजा और बुढ़िया

एक बार एक राजा किसी जंगल में अपने नौकरों के साथ शिकार खेलने गया। वहाँ उसको एक हिरन दिखाई पड़ा। उसने उसका पीछा किया, पर उसे न पा सका। अन्त में बहुत समय के बाद वह अपने डेरे की ओर लौटा, पर कुछ दूर जाने पर रास्ता भूल गया। उसके नौकर उसे जंगल में इधर-उधर ढूँढ़ते थे; पर उनसे उसकी भेंट न हुई। वह जंगल में भटकता हुआ रात के समय एक झोपड़ी के पास पहुँचा जिसमें एक बुढ़िया रहती थी। राजा ने झोपड़ी के दरवाजे पर पुकारा। उसकी आवाज सुनकर वह बुढ़िया दिया लिये हुये बाहर आई। उसने राजा को नहीं पहचाना; पर उसके ठहरने के लिये झोपड़ी में स्थान दिया और उसे कन्द-मूल-फल खिलाये। राजा रात भर आराम से सोया।

सवेरे उठकर राजा ने बुढ़िया को धन्यवाद दिया और अपनी राजधानी को चला गया। उसके धन्यवाद से बुढ़िया को बड़ा आनन्द हुआ। दूसरे दिन राजा ने अपने मन्त्री के हाथ बुढ़िया के पास बहुत सा अनाज, वस्त्र और रुपये भेजे। जब बुढ़िया को मालूम हुआ कि मैंने पिछले दिन राजा का आदर-सत्कार किया था और अब उसने मेरी सहायता की है, तब उसे बहुत ही आनंद हुआ। उसने ईश्वर, राजा और मन्त्री को उनकी कृपा के लिए धन्यवाद दिया।

(ख) कहानी दुहराने के लिए खंड

(१) राजा का शिकार के लिये जाना।

(२) हिरन का पीछा करना।

(३) हिरन को न पाकर राजा का लौटना।

(४) रास्ता भूलना और अँधेरा होना।

(५) बुढ़िया की झोपड़ी के पास पहुँचना।

(६) बुढ़िया का राजा को ठहराना और उसका आदर-सत्कार करना।

(७) राजा का सवेरे राजधानी को जाना और बुढ़िया के लिए भेंट भेजना।

(ग) कहानी दुहराने की रीति

शिक्षक कहानी कहकर लड़कों को सुनावें और फिर उसके खंड श्यामपट पर लिख देवें। इन खंडों को देखकर लड़के पूरी कहानी सुनावें।

अभ्यास (२)

इस पाठ में बताई हुई रीति के अनुसार लड़के नीचे लिखी कहानियाँ दुहरावें।

(१) कौवा और साँप

किसी पेड़ पर कौवों का एक जोड़ा रहता था। उनके बच्चों को एक साँप खा जाता था जो उसी पेड़ की खोल में रहता था। एक दिन कौए की मादा ने नर से कहा कि अब हम लोगों को यह पेड़ छोड़ देना चाहिये; क्योंकि साँप के मारे हमारे बच्चे नहीं बच सकते। नर बोला कि तुम चिन्ता मत करो; क्योंकि मैंने साँप को नष्ट करने का उपाय सोच लिया है। यह उपाय मैं तुमको बताता हूँ। यहाँ आगे जो तालाब है उसमें नहाने के लिए एक राजकुमार अपने नौकरों के साथ हर दिन आता है। वह अपने कपड़े और सोने की साँकल उतार कर एक पत्थर पर रख देता है और फिर पानी में घुसता है, कल जब वह पानी में घुसे, तब तुम उसकी सोने की साँकल अपनी चोंच में दबा लेना और उसे पेड़ की खोल में डाल देना।

दूसरे दिन राजकुमार तालाव पर आया और कपड़े तथा साँकल उतार कर नहाने के लिए पानी में घुसा। तब कौए की मादा ने उसकी साँकल उठाकर पेड़ की खोल में डाल दी। पानी में से निकलने पर राजकुमार को उसकी सोने की साँकल न मिली। इस पर उसने अपने नौकरों को उसे खोजने की आज्ञा दी। उन्होंने जहाँ-तहाँ बहुत खोज की। अन्त में वह उस पेड़ की खोल में साँप के ऊपर पड़ी हुई दिखाई दी। तब नौकरों ने पेड़ की जड़ को खोदना शुरू किया जिससे साँप बाहर निकल आया। साँप को देखते ही उन्होंने मार डाला और खोल में से राजकुमार की साँकल निकाल ली।

(२) बाघ और लोमड़ी

किसी समय एक बाघ बुढ़ापे के कारण निर्बल और लाचार हो गया। आहार की खोज में इधर-उधर नहीं जा सकता था, इसलिए भूख के मारे बहुत व्याकुल रहने लगा। अन्त में उसने एक उपाय सोचा। वह अपनी गुफा के द्वार पर बीमार बन कर पड़ा रहा। यह सुनकर जो कोई जानवर उसकी खबर लेने आता उसे वह फुसलाकर गुफा के भीतर ले जाता और वहाँ खा डालता।

एक दिन एक लोमड़ी आई और बाघ को प्रणाम करके बोली कि अब आपका जी कैसा है? बाघ ने कहा कि मैं बहुत निर्बल हो गया हूँ, मेरे सब दाँत गिर गये हैं, और भूख भी जाती रही है। यदि तुम कृपा कर मेरी गुफा के भीतर चलो, तो मैं वहाँ तुमसे बातचीत करूँ। लोमड़ी ने कहा कि आप पहले मेरे एक प्रश्न का उत्तर दीजिए। यहाँ आपकी गुफा में जाने वाले जानवरों के पद दिखाई देते हैं पर वहाँ से लौटने वालों के चिह्न नहीं पाये जाते। इसका क्या कारण है? बाघ इस प्रश्न का कोई उत्तर न दे सका इसलिये लोमड़ी वहाँ से अपने प्राण बचाकर भाग गई।

(३) दो स्त्रियाँ और बच्चा

एक बार एक स्त्री ने पड़ोसिन के छोटे बच्चे को चुरा कर अपने घर में छिपा लिया। बच्चे की माँ ने अपने लड़के को बहुत खोजा पर वह कहीं न मिला। अचानक पड़ोसिन के घर में उसका रोना सुनकर उसने जान लिया कि मेरे बच्चे को इसने छिपाया है। तब बच्चे की माँ ने पड़ोसिन से अपना बच्चा माँगा। पड़ोसिन ने कहा कि वह बच्चा मेरा है, तुम्हारा नहीं। इस पर उस स्त्री ने राजा के यहाँ अपना दुःख सुनाया।

राजा ने दूसरी स्त्री और उस बच्चे को अपने सामने बुलवाया और दोनों स्त्रियों से पूछा कि बच्चा किसका है। प्रत्येक ने कहा कि बच्चा मेरा है। उन दोनों की बातें सुनकर राजा को सच्ची बात का पता न लगा। इसलिए उसने एक चतुराई की। अपने एक सिपाही को बुलाकर राजा ने झूठ-मूठ यह आज्ञा दी कि इस बच्चे के दो टुकड़े करके एक-एक स्त्री को एक एक टुकड़ा दे दो! यह आज्ञा सुनते ही चोर स्त्री तो चुप हो गई पर बच्चे की माँ फूट फूट कर रोने लगी। उसने राजा से रोते हुए कहा कि कृपा कर बच्चे के टुकड़े न कराइये। इन बातों से राजा को विश्वास हो गया कि रोने वाली स्त्री ही बच्चे की माँ है। अब उसने बच्चे को उसकी माँ को दिला दिया और दूसरी स्त्री को कैद का दंड दिया।

(४) शिकारी की कहानी

एक शिकारी जंगल में बाघ का शिकार करने के लिये गया। वहाँ उसने एक ऊँचे पेड़ पर मचान बनवाया और संध्या के समय बन्दूक लेकर उस पर बैठ गया। आधी रात तक वहाँ कोई जंगली जानवर न आया और शिकारी को बैठे-बैठे नींद आने लगी। इतने में अचानक पत्तों की खड़खड़ाहट सुनाई पड़ी जिससे शिकारी सचेत होकर बैठ गया। थोड़ी देर के बाद चाँदनी में एक बाघ

धीरे-धीरे आता हुआ दिखाई पड़ा। अब शिकारी और भी सचेत हो गया। ज्योंही वह निकट आया, त्योंही उसने उस पर निशाना जमाकर बन्दूक चला दी। गोली लगते ही बाघ ने खूब जोर से गरजकर, पेड़ की तरफ, ऊँची छलाँग मारी पर वह शिकारी के पास तक न पहुँच सका। नीचे गिर कर वह एक झाड़ी की तरफ भागा और वहीं पड़ा रहा। शिकारी बीच-बीच में ऊँघता और जागता हुआ मचान पर रात भर बैठा रहा।

सवेरा होने पर वह बाघ की खोज में झाड़ी की तरफ गया। थोड़ी दूर पर कराहने की आवाज सुनाई पड़ी तब वह बाघ को दूसरी गोली मारने के विचार से आगे बढ़ता गया और अचानक बाघ के पास जा पहुँचा। शिकारी को देखते ही बाघ उस पर इतने जोर से झपटा कि उसके धक्के से वह शिकारी गिर पड़ा। तब बाघ ने शिकारी को बड़े जोर से अपने पंजे की थप्पड़ मारी इससे उसकी भरी हुई बन्दूक चल गई और दूसरी गोली लगने से वह घायल बाघ मर गया। शिकारी को भारी चोट आई और उसकी देह में बड़ा घाव लगा; पर वह मृत्यु के मुख से बच गया।

(५) तीन मूर्ख और मीनार

एक बार तीन मूर्ख किसी शहर में आये। वहाँ उन्होंने एक मीनार पहले-पहल देखी। उसे देखकर उनको बड़ा अचरज हुआ। तब एक मूर्ख बोला कि पुराने समय में इतने ऊँचे आदमी होते थे कि वे ऐसा खंभा खड़े-खड़े बना लेते थे। इस पर दूसरे ने कहा कि तुम यह बात नहीं समझ सकते। इसे बनाने के लिये लम्बे आदमियों की जरूरत नहीं है। यह खंभा जमीन पर लिटा कर लंबा बनाया जाता है और फिर खड़ा कर दिया जाता है। यह सुन कर तीसरा बोला कि तुम दोनों मूर्ख हो। तुम लोगों की समझ में ये बातें नहीं आ सकतीं। सुनो मैं बताता हूँ। इस पोले खंभे को बनाने के लिये पहले गहरा कुआँ खोदते हैं और फिर उसे उलटा देते हैं। ऐसा करने से कुआँ खम्भा बन जाता है।

तीसरा परिच्छेद

बातचीत

(क) बातचीत का उदाहरण

(दूध के विषय में)

गुरु—राम ! हम लोग किन-किन जानवरों का दूध खाते-पीते हैं ?

शिष्य—हम लोग गाय और भैंस का दूध खाते-पीते हैं।

गुरु—गाय-भैंस के सिवा और किन-किन जानवरों का दूध खाया-पिया जाता है ?

शिष्य—गाय और भैंस के सिवा कभी-कभी बकरी का दूध भी पिया जाता है।

गुरु—बकरी का दूध बहुधा छोटे बच्चों को पिलाया जाता है।

शिष्य—बकरी के सिवा कभी-कभी बच्चों को गधी का भी दूध देते हैं।

गुरु—गधी का दूध केवल दवाई के रूप में थोड़ा-सा दिया जाता है।

शिष्य—पंडित जी, दूध कच्चा पीना चाहिये या गरम करके ?

गुरु—कच्चे की अपेक्षा गरम किया हुआ दूध अधिक उपयोगी होता है।

शिष्य—दूध से क्या लाभ होता है ?

गुरु—अच्छा, तुम्हीं बताओ दूध से क्या लाभ होता है ?

शिष्य—दूध-खाने-पीने से शरीर बलवान होता है।

गुरु—गाय-भैंस के दूध से कौन-कौन चीजें बनती हैं ?

शिष्य—गाय-भैंस के दूध से दही, मक्खन और मट्ठा बनता है।

गुरु—मक्खन से घी कैसे बनता है ?

शिष्य—मक्खन को खौलाने से घी बनता है।

गुरु—दूध से खोया भी बनता है जिससे कई तरह की मिठाइयाँ बनाई जाती हैं।

(ख) बातचीत

हम लोग गाय-भैंस का दूध खाते-पीते हैं। इनके सिवा कभी-कभी बकरी और गधी का दूध भी पिया जाता है। कच्चे दूध की अपेक्षा गरम किया हुआ दूध और अधिक उपयोगी होता है। दूध पीने से शरीर बलवान होता है। गाय-भैंस के दूध से दही, मही, मक्खन और घी बनता है। उनके दूध के खोवे से कई प्रकार की मिठाइयाँ बनती हैं।

(ग) बातचीत सिखाने के लिए विषय के खंड

(१) दूध की उत्पत्ति—गाय, भैंस। (२) प्रकार—बकरी। (३) लाभ—बल-प्राप्ति। (४) उपयोग—दही, मही, मक्खन, घी, मिठाई।

(घ) बातचीत सिखाने की रीति

शिक्षक परिचित पदार्थों और प्राणियों के विषय में लड़कों से बातचीत करें, पर बातचीत निरा प्रश्नोत्तर न हो। पाठ के प्रश्न ऐसे न हों कि लड़के उत्तर न दे सकें। यदि आवश्यकता हो तो विषय की कुछ बातें लड़कों को पहले से बता दी जावें। केवल शिक्षक ही प्रश्न न करें, किन्तु लड़के भी अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए, शिक्षक से प्रश्न करें, और बिना शिक्षक के प्रश्न के भी अपनी जानी हुई बातें बीच-बीच में बतावें। विषय की केवल मुख्य-मुख्य बातें ली जावें और बातचीत में विषयान्तर न होने पावे। बातचीत का अभ्यास लड़कों से भी आपस में कराया जावे। शिक्षा के लिये आवश्यकता होने पर चित्रों अथवा नमूनों का उपयोग किया जा सकता है। बातचीत के सारांश को लड़के खंडों की सहायता से दुहरावें।

अभ्यास (३)

पूर्वोक्त रीति के अनुसार नीचे लिखे विषयों पर बातचीत की जावे (१) आम (२) घोड़ा (३) शक्कर (४) पानी (५) नदी (६) सूर्य (७) चिट्ठी-रसा (८) खेत (९) कपड़ा (१०) चमार (११) मोटर (१२) पेड़ (१३) पुस्तक (१४) चाकू (१५) भिखारी।

चौथा परिच्छेद

नाटक

(क) नाटक का उदाहरण

सच्चाई

पहिला दृश्य

स्थान—पुस्तकों की दूकान

(मोहन और सोहन नाम के दो लड़के पुस्तकों के बंडल बाँध रहे हैं)

मोहन—क्यों भाई सोहन, तुमने, कितने बंडल बाँध लिये ?

सोहन—भाई, अभी तक मैंने सिर्फ दस बंडल बाँधे हैं और तुमने कितने बाँध लिये ?

मोहन—मैंने पन्द्रह बंडल बाँध लिये।

सोहन—मैं भी साँझ तक पाँच बंडल बाँध लूँगा।

मोहन—शाम तक तो बीस बंडल बाँधना पड़ेगा।

सोहन—मैं तो धीरे-धीरे काम करूँगा। अगर शाम तक मेरे बीस बंडल न होंगे तो भी दूकानदार से कह दूँगा बीस बंडल हो गये।

मोहन—मैं तो अपना काम पूरा करूँगा और यदि शाम तक बीस बंडल न होंगे तो जितने होंगे उतने बता दूँगा। मैं झूठ न बोलूँगा।

सोहन—तुम्हें जो करना हो सो तुम करना। मुझे जो करना होगा सो मैं करूँगा।

(दूकानदार आता है)

दूकानदार—मोहन तुमने कितने बंडल बाँधे ?

मोहन—महाशय, मैंने बीस बंडल बाँधे हैं।

दूकानदार—(सोहन से) और तुमने कितने बाँधे ?

सोहन—मैंने भी बीस बंडल बाँधे हैं। आप गिन लीजिये।

दूकानदार—कल गिन लूँगा।

(प्रत्येक लड़के को एक चवन्नी और एक एकन्नी अर्थात् पाँच आने देने के बदले भूल से दो चवन्नियाँ देता है)

दूसरा दृश्य

स्थान—बनिये की दूकान

(मोहन और सोहन दाल-चावल मोल ले रहे हैं)

मोहन—भाई सोहन पुस्तक वाले ने मुझे भूल से पाँच आने के बदले आठ आने दे दिये। मैं उसे तीन आने लौटा दूँगा।

सोहन—मुझे भी आठ आने दिये हैं।

मोहन—तुमने कितने बंडल बाँधे हैं ?

सोहन—मैंने तो सिर्फ सोलह बंडल बाँधे हैं।

मोहन—तो तुम्हें चार आने ज्यादा मिले। तुम भी उनके ज्यादा पैसे लौटा देना।

सोहन—मैंने तो दूकान-वाले को मूर्ख बना दिया। अब मैं पैसे क्यों लौटाऊँगा।

मोहन—तुम्हारी जो इच्छा।

बनिया—(सोहन से) यह तुम्हारी भूल है। अगर तुम धोखा दोगे तो कोई तुम्हारा विश्वास न करेगा।

सोहन—मुझे इसका कोई डर नहीं।

तीसरा दृश्य

स्थान—कचहरी

(न्यायाधीश के सामने सिपाही, दूकानदार, मोहन, सोहन और बनिया खड़े हैं)

न्यायाधीश (सोहन से)—तुमने पूरा काम भी नहीं किया और दूकानदार के ज्यादा पैसे भी नहीं लौटाये।

सोहन—अब मैं पैसे लौटा दूँगा और काम भी पूरा कर दूँगा।

न्यायाधीश—पर अब तो तुम झूठ बोलने और धोखा देने के अपराधी हो गये। अब तुम्हें कैद की सजा दी जायगी। अगर तुम मोहन की तरह सच्चाई से काम करते तो तुम्हें इनाम मिलता।

सोहन—सरकार, मेरा अपराध क्षमा किया जाय। मैं अब फिर ऐसा न करूँगा।

न्यायाधीश—तुम दूकानदार से क्षमा माँगो।

सोहन—(दूकानदार से) महाराज मेरा अपराध क्षमा कीजिये। (उसके पैरों पर गिरता है)

दूकानदार—अच्छा मैंने तुम्हारा अपराध क्षमा किया, अब आगे ऐसा मत करना।

सोहन—जो आज्ञा।

(ख) नाटक की कहानी

पुस्तक की एक दूकान में मोहन और सोहन नाम के दो लड़कों ने एक दिन बंडल बाँधने का काम किया। मोहन ने अपना काम शाम तक पूरा कर लिया। सोहन ने अधूरा काम किया और झूठ बोलकर उसे पूरा बता दिया। दूकानदार ने भूल से प्रत्येक को पाँच आने के बदले आठ आने दिये। बनिये की दूकान पर दाल-चावल लेते समय लड़कों को ज्यादा पैसे मिलने की बात मालूम हुई। मोहन ने ज्यादा पैसे दूकानदार को लौटा दिये। परन्तु सोहन ने नहीं लौटाये। दूकानदार ने कचहरी में नालिश कर दी मोहन और बनिये ने गवाही दी। न्यायाधीश सोहन को कैद की सजा देने वाला था; दूकानदार से क्षमा माँगने पर उसे छोड़ दिया।

(ग) नाटक सिखाने के लिये विषय के ढंग

(१) नाटक—पात्र-दूकानदार, मोहन, सोहन, बनिया, सिपाही, न्यायाधीश।

(२) दृश्य—पुस्तकों की दूकान, बनिया की दूकान, कचहरी।

(३) सामग्री—पुस्तक, दाल-चावल की टोकरियाँ, मेज, कुर्सी।

(४) कार्य—बंडल बाँधना, दाल-चावल खरीदना, कचहरी में खड़े होना।

(घ) नाटक सिखाने की रीति

नाटक सिखाने के लिये पहले उसका कथा-भाग कहकर लड़कों को बताया जाय, फिर लड़कों से अलग-अलग पात्रों के भाषण

कंठाग्र कराये जाएँ। उनको स्वतंत्र और स्वाभाविकता से बोलने का अभ्यास करने की आवश्यकता है। भाषण में अनुरूप हाव-भाव भी बताना आवश्यक है। नाटक में तीन-चार दृश्य से अधिक न रहें, यदि शिक्षक भी पात्रों में सम्मिलित हो सके तो और भी अच्छा है। नाटक के पश्चात् किसी विद्यार्थी से उसका कथा-भाग पूछना चाहिये। किसी से किसी पात्र का चरित्र पूछना भी आवश्यक है।

अभ्यास (४)

नीचे लिखी कहानियां नाटक के रूप में सिखाई जावें —

(१) राजा और कैदी।
(२) शेखचिल्ली और हांडी।
(३) कंजूस की दुर्दशा (पृ० ६)
(४) राजा और बुढ़िया (पृ० ११)
(५) दो स्त्रियां और बच्चा (पृ० १४)
(६) तीन मूर्ख और मीनार (पृ० १६)
(७) तीन भाइयों का बँटवारा।
(८) बुड्ढा मनुष्य और उसका बैल।
(९) भीष्म-प्रतिज्ञा।
(१०) शिक्षक और अछूत विद्यार्थी।

पाँचवाँ परिच्छेद

वाद-विवाद

(क) वाद-विवाद का उदाहरण

नगर और गाँव

राम—मैं गाँव में रहना पसन्द करता हूँ।
श्याम—क्यों ?
राम—वहाँ खुली हवा और धूप मिलती है।
श्याम—पर गाँव के किनारे कचरे के ढेर लगे रहते हैं और उसी के पास लोग निस्तार करते हैं।

राम—गाँव में कचरा पड़ा रहता है; पर वहाँ नगर की नाई घरों और नालियों में दुर्गन्ध तो नहीं रहती।

श्याम—नगर के घरों और नालियों का दुर्गन्ध तो हर रोज दूर की जाती है; पर गाँव के कूड़े-कचरे की दुर्गंध तो कभी निकाली ही नहीं जाती।

राम—तो भी वहाँ शहर से कम दुर्गन्ध रहती है।

श्याम—गाँव में अगर कोई बीमार पड़ जाय तो वहाँ वैद्य या डाक्टर नहीं मिलता।

राम—गाँव में बहुत कम लोग बीमार होते हैं और वहाँ शहर की तरह बीमारी नहीं फैलती।

श्याम—गाँव के लोग मूर्ख और अपढ़ रहते हैं।

राम—पर वे सच्चे और शान्त होते हैं।

श्याम—गाँवों में बड़ी-बड़ी दुकानें नहीं रहतीं जिनमें कपड़े, गहने और बर्तन मिल सकें।

राम—गाँव में इनके बदले अनाज पैदा होता है जिससे शहर वालों के जीवन की रक्षा होती है।

श्याम—गाँव में न सड़क होती है, और न ताँगे, बग्घियाँ और मोटरें चलती हैं।

राम—गाँव के रहने वाले गाड़ियों में बैठकर आलसी नहीं बनते, वे पैदल ही कई कोस चल सकते हैं।

श्याम—गाँव में विद्या पढ़ने के लिये कोई सुभीता ही नहीं है जिससे वहाँ के लोग जन्म भर अपढ़ बने रहते हैं। मैं तो शहर में ही रहना पसन्द करता हूँ।

शिक्षक—शहर और गाँव के लाभ और हानियाँ एक सी हैं, इसलिये दोनों में कोई बड़ा या छोटा नहीं है।

विषय का सारांश

गाँव में खुली हवा, आरोग्यता और सस्तापन है। वहाँ रोग

का भय नहीं है। गाँव वाले सच्चे और सज्जन होते हैं। परिश्रमी भी होते हैं। गाँव में खेती होती है और वहाँ अनाज पैदा होता है। गांव में सबसे बड़ी हानि यह है कि वहाँ विद्या प्राप्त करने का सुभीता नहीं है। गाँव में सफाई भी नहीं रहती।

शहर में रोज सफाई होती है और वहाँ बीमारी मिटाने के लिये वैद्य और डाक्टर रहते हैं। शहर के लोग चतुर और चालाक होते हैं। शहर में कई बड़ी-बड़ी दूकानें रहती हैं और कई चीजों का व्यापार होता है। आने-जाने के लिये शहर वाले कई तरह की गाड़ियाँ रखते हैं? नगर में सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि वहाँ अनेक प्रकार की विद्याएँ पढ़ सकते हैं। शहर में रहने से खर्च बहुत पड़ता है और घी दूध शुद्ध नहीं मिलता।

(ख) विषय खण्ड

(१) गाँव

लाभ—खुली हवा और धूप; बीमारी की कमी; गाँव वाले सच्चे और सज्जन; खेती अनाज की उपज; घी-दूध की शुद्धता; सस्तापन; परिश्रम का अवसर; आडम्बर का अभाव।

हानि—विद्या का अभाव; सफाई की कमी; व्यापार की कमी; सवारियों की कमी।

(२) शहर

लाभ—सफाई का प्रबन्ध; वैद्यों और डाक्टरों की सहायता; बड़ी-बड़ी दूकानें और आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति; सड़कें और सवारियाँ; विद्या प्राप्ति का सुभीता; शहर वाले सभ्य और चतुर।

हानि—महँगापन; घी-दूध की अशुद्धता; लोगों की चालाकी; बीमारी की बढ़ती।

(ग) वाद-विवाद सिखाने की रीति

शिक्षक वाद-विवाद में दोनों पक्षों के विषय लड़कों को सुना दे

और फिर किसी एक लड़के से एक पक्ष का विषय और दूसरे से दूसरे पक्ष का विषय पूछे। यदि लड़के किसी विषय की कुछ नई और ठीक बातें अपने मन से कहें तो शिक्षक उन्हें भी ग्रहण कर ले। इसके पश्चात् दोनों लड़कों में वाद-विवाद कराया जाय। प्रत्येक बालक अपने प्रतिद्वन्द्वी की बात का खंडन और अपनी बात का मंडन उचित रीति से करे। अन्त में शिक्षक मध्यस्थ के रूप में अपनी सम्मति देवें। विद्यार्थियों की एक से अधिक जोड़ियों में भी वाद-विवाद कराया जा सकता है। जब लड़कों को कुछ अभ्यास हो जाय, तब वे विषय के केवल खण्डों की सहायता से पहले साधारण और फिर विस्तृत वाद-विवाद कर सकते हैं। वाद-विवाद का विषय सरल और मनोहर हो।

अभ्यास (५)

पहले बताई हुई रीति के अनुसार नीचे लिखे विषयों पर लड़कों से वाद-विवाद कराया जाय।

(१) कुत्ता और बिल्ली।
(२) रोटी और भात।
(३) गेहूँ और चना।
(४) सोना और लोहा।
(५) सेम और इमली।
(६) टोपी और साफा।
(७) कम्बल और दुशाला।
(८) धन से लाभ हानि।
(९) नशे से लाभ-हानि।
(१०) स्त्री-शिक्षा।
(११) भाग्य और उद्योग।

लिखित रचना

पहला परिच्छेद

(क कहानियों की पूर्ति का उदाहरण

कहानियों की पूर्ति

कहानी

घमंडी बारहसिंगा

एक घमंडी बारहसिंगा एक···किसी तालाब में···पी रहा था। ···परछाईं···उसने · कि मेरे सींग के ··किसी·· नहीं है।··· वहाँ ··लोमड़ी···।···देख ··बारहसिंगे ने···कहा कि···तुमको मेरे सींगों के कारण मुझसे···नहीं होती ? लोमड़ी ने कहा···मुझे ईश्वर ने···दी है,···तुम्हारे सींगों······तुमसे···नहीं होती ।··· में कहीं से···की आवाज···पड़ी। उसे···लोमड़ी एक···में घुस गई ··जंगल को···। वहाँ ··सींग एक झाड़ी में उलझ···। शिकारी उसका ··करता हुआ···के···पहुँचा और उसने···मारी। मरते··· बारहसिंगे ने···कहा कि···सींगों की मैं बड़ाई···उन्हीं के··· मेरी · हुई।

(ख) कहानी की पूर्ति

एक घमंडी बारहसिंगा एक दिन किसी तालाब में पानी पी रहा था। पानी में अपनी परछाईं देखकर उसने सोचा कि मेरे सींगों के समान किसी जानवर के सींग नहीं हैं। इसी समय वहाँ एक लोमड़ी आई। उसे देख बारहसिंगे ने उससे कहा कि क्या तुमको मेरे सींगों के कारण मुझसे ईर्ष्या नहीं होती ? लोमड़ी ने कहा कि मुझे ईश्वर ने बुद्धि दी है, इसलिये मुझे तुम्हारे सींगों के कारण तुमसे कभी ईर्ष्या नहीं होती। इतने में कहीं से बन्दूक की

आवाज सुनाई पड़ी। उसे सुनकर लोमड़ी किसी बिल में घुस गई और बारहसिंगा जंगल की ओर भागा। वहाँ उसके सींग एक झाड़ी में उलझ गये। शिकारी उसका पीछा करता हुआ झाड़ी के पास पहुँचा और उसने उसे गोली से मारी। मरते समय बारहसिंगे ने पछता कर कहा कि जिन सींगों की मैं बड़ाई करता था, उन्हीं के कारण मेरी मृत्यु हुई।

(ग) कहानी की पूर्ति करने की रीति

अध्यापक काले तख्ते पर ऐसी परिचित कहानी लिखे जिसमें बीच-बीच में भिन्न प्रकार के शब्द छोड़ दिये गये हों। फिर वह लड़कों से उपयुक्त शब्दों के द्वारा कहानी की पूर्ति करावे तब लड़के अधूरी कहानी अपनी क़ापी में लिख लें और फिर छूटे हुए शब्द लाल रोशनाई से लिखते हुये पूरी कहानी दूसरी बार स्याही से लिखें।

अभ्यास (१)

बताई हुई रीति के अनुसार लड़के आगे लिखी हुई अधूरी कहानियों की पूर्ति करें—

(१) अंधा और लँगड़ा

एक…किसी…में अकाल पड़ा। वहाँ के…लोग एक अंधे…एक लँगड़े को…चले गये। इन दोनों को…जाने के लिये कोई…न था; लँगड़े ने किया "यदि…मुझे अपनी पीठ…बिठाकर" तो…मैं "रास्ता बताता…ऐसा । उससे…उपाय अंधे को…। अंधा बात पर राजी…और उसने…अपनी पीठ पर बिठा…। तब लँगड़ा…को…बताने लगा…वह उसके कहने के चलने…। एक ने…से सहायता…की और…ने पाँओं से। इस वे एक…दूसरे की…से ऐसे स्थान में…जहाँ उन…को खाने के लिये…मिलने लगा।

(२) भिखारी और सत्तू की हंडी

स्वभाव-कृपण नाम का…भिखारी था। उसने भिक्षा…सत्तू

एक हंडी…। उसी हंडी को खूँटी पर…और…नीचे खाट…उस…पड़ गया। फिर उसकी…देखकर…विचार करने…। उसने…कि पानी न बरसने से…पड़ेगा। तब मैं हंडी का सत्तू…बहुत धन…। उस…से मैं दो…लूँगा। उनके…से और भी बकरियाँ…। उन्हें…मैं गायें…। गायों के…से और भी…होंगी। गायों से मैं घोड़ियाँ उनसे बहुत से……होंगे। इस…मैं बहुत से पशुओं का…हो जाऊँगा। तब मेरे…बहुत सा…हो जायगा। फिर घुड़साल और घर…किया जायँगा। इस पर…ब्राह्मण। मेरे घर…अपनी कन्या…देगा। उससे मेरे पुत्र…होगा। उसका मैं सोमशर्म्मा रक्खूँगा। कुछ…के…मेरा पुत्र घुटनों के…चलेगा। तब किसी…मैं घुड़साल…पीछे बैठूँगा। इस…सोमशर्म्मा मुझे…माता की…छोड़ मेरे…आवेगा। तब मैं स्त्री से कहूँगा यह…घोड़े की टाप के…जाता है।…इसे पुकार न…चाहिये। तब मैं…आकर उसे…प्रकार…मारूँगा।…कहकर…भिखारी ने…लात…कि वह…फूट गई सत्तू…।

(३) बन्दर और घंटा

एक…घंटा लेकर भागते हुये…चोर को बाघ ने खा…। उसके हाथ से गिर…गया उसे बन्दरों ने पा…। बन्दर उस…को बजाया…थे। पर्वत के…नगर के…ने बाघ…उस मनुष्य का…करते हुये…था और…घंटे का…बार बार सुना…थे। तब नगरवासी…सोचकर कि…राक्षस…में आकर मनुष्यों को……और…घंटा…नगर…भाग गये। इस…कराला…स्त्री ने यह सोचकर…बन्दर घंटा बजाते हैं, राजा से…की…हे देव,…आप कुछ धन…करें तो…घंटा वाले राक्षस को मारूँ। राजा ने…धन दिया। तब…स्त्री ने गणेश पूजा…ढोंग…और बन्दरों को रुचने वाले फल…उन्हें वन में बिखरा…।…देखकर बन्दरों ने घंटा को…और फल खाने…। कराला घंटे…नगर में लाई…सब…ने उसका…किया।

(४) गधा और भेड़िया

एक गधा···मैदान में चरता···।···किसी भेड़िया···दूर से देखा। उसके···उसे खाने की इच्छा······। जब···गधे से······आया, तब उसके···से गधे को···हो गया···भेड़िया···खा लेगा।···वह लँगड़ा···चलने लगा। भेड़िये ने···लँगड़ेपन···का···पूछा। गधे···कहा कि···झाड़ी में चलते···मेरे पाँच काँटा···। आप···खाने वाले हैं; इसलिए···इस काँटे को निकाल···जिसमें···आपके···न गड़े। भेड़िया इस···पर···हो गया और···पाँव···काँटा·· ···लगा।······में गधे ने···भेड़िये को···जोर से···मारी कि दाँत···पेट में चले···वह भाग गया।···प्रकार घायल···भेड़िया···पछताया···मन में कहने लगा···मैंने···दंड···क्योंकि···पिता ने···कसाई का···सिखाया था मैं···काम करने लगा।

---

(५) मेल से लाभ

···बूढ़े आदमी के लड़के···सदा लड़ा करते थे।···उन्हें बातों से···समझाया,···उन्होंने अपना···न बदला। निदान जब···मनुष्य के मरने का···निकट तब,···उन्हें प्रत्यक्ष उदाहरण के···देने का किया। उसने लकड़ियों का···गट्ठा मँगवाया···प्रत्येक···से···तोड़ने को···हर एक···ने उसे तोड़ने का···किया, वह···से···टूटा। तब पिता ने एक लकड़ी···लड़के···के लिये···उन्होंने अपनी···लकड़ी में तोड़ डाला।···इस···बूढ़े···ने···लकड़ी···से कि···देखो···तुम लकड़ियों के···मिले···तो शत्रु···कष्ट···दे सकेंगे···यदि···में लड़कर···अलग···रहोगे,···तुम्हारे···तुम्हें···पाकर···देंगे।

दूसरा परिच्छेद

कहानियों का पुनर्लेखन

(क) कहानी के खंड

भेड़िया और भेड़

(१) भेड़िया और भेड़ का किसी एक नदी में एक ही घाट पर पानी पीना।

(२) भेड़िये का भेड़ को खाने की इच्छा करना और उसी पर पानी मैला करने का दोष लगाना।

(३) भेड़ का इस दोष को भी अनुचित बताना और भेड़िया का उसके बाप पर कुत्ता दौड़ाने का अपराध लगाना।

(४) भेड़ का इस दोष को भी अनुचित बताना और भेड़िये का और भी दोष लगाकर उसे खा जाना।

पुनर्लिखित कहानी

किसी समय एक भेड़िया और एक भेड़ एक नदी में एक ही घाट पर पानी पीते थे। भेड़ को देखकर भेड़िये को उसे खाने की इच्छा हुई। तब उसने उससे कहा कि तू मेरे पीने का पानी क्यों मैला कर रही है ? भेड़ ने नम्र होकर कहा कि पानी तुम्हारे पास से बहकर मेरे पास आता है। इसलिये मेरे कारण तुम्हारे पास का पानी मैला नहीं हो सकता। इस पर भेड़िये ने कहा कि कुछ दिन हुए तेरा बाप मेरे पीछे कुत्ते दौड़ाता था। यह सुनकर भेड़ बोली कि मेरा बाप तो मेरे जन्म के पहिले ही मर गया था, तब भेड़िया बोला कि तुम्हारा बाप न होगा तो माँ होगी।

मैं कहाँ तक पता लगाऊँगा। यह कह कर वह भेड़ पर झपटा और उसे मार कर खा गया।

(ख) कहानी को फिर से लिखने की रीति

शिक्षक कोई कहानी लड़कों को सुना देवे और लड़कों की सहायता से उनके खंड श्यामपट पर लिख देवे। यदि कहानी

परिचित हो तो उसके केवल खंड बता देना चाहिये। लड़के इन खंडों की सहायता से कहानी लिखें।

अभ्यास (२)

नीचे लिखे खंडों की सहायता से लड़के कहानियाँ बनाकर लिखें—

(१) बन्दर और मगर

(१) नदी में से निकल कर किसी मगर का एक पेड़ के नीचे आना और बन्दर का उसे मीठे फल खाने को देना।

(२) मगर का बहुत दिन तक बन्दर के साथ रहना और मगरी का मगर से कारण पूछना।

(३) मगर का मगरी को मीठे फल खिलाना और मगरी का बन्दर का मीठा कलेजा खाने की इच्छा करना।

(४) मगर का बन्दर को अपने यहाँ न्योता देकर छल से ले जाना और वहाँ उसका कलेजा माँगना।

(५) बन्दर का मगर को छल जानना और घर से कलेजा लाने का बहाना करके घर आना।

(६) मगर का फिर आकर कलेजा माँगना और बन्दर का उसे दुत्कारना।

(२) पेट और इन्द्रियाँ

(१) इन्द्रियों का पेट से उसके आराम और अपने काम की शिकायत करना और पेट का उन्हें समझाना।

(२) इन्द्रियों का पेट से बदला लेने का विचार करना और अपना अपना काम छोड़ना।

(३) पेट को भोजन न मिलने से प्रत्येक इन्द्रिय का निर्बल होना और पछताना।

(४) पेट का उन्हें फिर समझाना और इन्द्रियों का अपनी भूल स्वीकार करना।

(३) कुत्ता और गधा

धोबी के यहाँ कुत्ता और गधा···रात के समय चोर घुसा··· गधे ने कुत्ते से भौंकने को कहा···कुत्ते ने पूरा भोजन न मिलने के कारण अस्वीकृत किया···गधे ने उसे कर्त्तव्य बताया। चोर भाग गया···कुत्ते ने उसे रोकने को कहा···गधा रेंका···मालिक की नींद टूट गई···उसने गधे को खूब पीटा।

(४) खाऊ सियार

दो सियारों ने खेत में चिड़िया पकड़ी···उन्हें खाने लगे···एक बूढ़ा और खाऊ था...उसने दूसरे दिन के लिये रख छोड़ने को कहा···दूसरे दिन फिर खाने को आये···जवान सियार को खेत वाले ने मार डाला...बूढ़े सियार ने बाकी चिड़िया खाई...पेट फट गया...मर गया।

(५) पिता की सेवा

गरीब आदमी······दवाई के दाम अधिक······लड़के को चिन्ता···एक खबर मिलना···पहाड़ पर गीधों के बच्चे···राजा की ओर से उन्हें पकड़ने के लिये इनाम...लड़के का ऊँचे पहाड़ पर चढ़ना...जोखिम में पड़कर बच्चे को लाना···इनाम पाना··· दवाई के दाम देना···बाप का चंगा होना।

तीसरा परिच्छेद

(१) देखी हुई वस्तुओं का वर्णन

(क) प्राणी

(१) गाय

पालतू जानवरों में गाय बहुत उपयोगी है। गायों के सींग होते

हैं, पर किसी-किसी के नहीं होते। इसकी आँखें बड़ी होती हैं और पुतली तिरछी रहती है। इसकी दृष्टि कोमल होती है। गाय के कान बड़े और चलायमान होते हैं। इनके द्वारा वह कीड़ों और मक्खियों को भगा देती है। मुँह चौड़ा होता है और नथने बड़े तथा खुले रहते हैं। इसके ऊपरी जबड़े में केवल डाढ़ें रहती हैं।

गाय की गर्दन होती है। शरीर जितना लम्बा होता है लगभग उतना ही ऊँचा होता है। चमड़ा मोटा होता है और उस पर छोटे-छोटे बाल रहते हैं। गायें कई रंग की होती हैं, पर सफ़ेद, लाल और भूरी बहुत होती हैं। पेट के नीचे, पीछे की ओर ऐन होता है, जिसमें चार थन रहते हैं। इन थनों से दूध निकलता है। गाय की पूँछ लम्बी होती है और अन्त में झब्बा रहता है। इससे गाय कीड़ों और मक्खियों को भगाती है।

गाय की टाँगें छोटी होती हैं। हर एक पैर में दो खुर होते हैं जो एक दूसरे से कुछ दूर रहते हैं।

गाय का स्वभाव सीधा होता है। कोई-कोई गायें मरकही होती हैं। जिन गायों के बछड़े छोटे रहते वे उन्हें बचाने के लिये लोगों पर झपटती हैं।

गाय का दूध खाने-पीने के काम आता है। दूध से दही, मक्खन तथा घी बनता है, और खोये से कई प्रकार की मिठाइयाँ बनाई जाती हैं। गाय के चमड़े से जूते बनते हैं और हड्डियों से कंघियाँ तथा बटनें बनाई जाती हैं। खुरों से सरेस और चर्बी से मोमबत्तियाँ बनती हैं। गोबर खाद के काम में आता है। इससे कंडे भी बनाये जाते हैं जो जलाने के काम आते हैं।

गाय जुगाली करने वाला जानवर है। वह अपने आहार को पहले समूचा खा जाती है और फिर थोड़ा-थोड़ा निकाल कर चबाती है।

(२) सुआ

यह बड़ा ही मनोहर पक्षी है। इसका रङ्ग हरा होता है। आँखें गोल और छोटी होती हैं। सुए की चोंच बहुधा लाल रङ्ग की होती है। यह नुकीली, मुड़ी हुई और कड़ी होती है, जिससे वह फलों को कुतरता है। जीभ मोटी होती है जिससे सुआ नरम फलों का गूदा निकाल कर खाता है। चोंच की जड़ में दो छेद रहते हैं जिनके द्वारा साँस लेता है। नर के गले में कंठी होती है जिसका रङ्ग नीचे काला और ऊपर गुलाबी होता है।

सुए की टाँगें छोटी होती हैं; इसलिये वह धरती पर अच्छी तरह नहीं चल सकता। एक पंजे में चार-चार उँगलियाँ होती हैं। दो उँगलियाँ आगे और दो पीछे रहती हैं। प्रत्येक उँगली में लम्बे और टेढ़े नख रहते हैं जिनके द्वारा वह पेड़ की डाल को मजबूती से पकड़ सकता है।

सुए की पूँछ लम्बी होती है। उड़ते समय वह फैल जाती है और बहुत सुन्दर दिखाई देती है।

सुए की सुन्दरता के कारण लोग इसे पिंजड़े में पालते हैं। तोते कुछ शब्द सीख लेते हैं और उन्हें बड़ी स्पष्टता से बोलते हैं। ये आदमी की आवाज की नकल भी करते हैं, पर वे जो कुछ बोलते हैं उसे थोड़ा भी नहीं समझते।

सुए पेड़ के मीठे फलों को और खेत के अनाजों को कुतर डालते हैं। उन्हें ककड़ी, खरबूजा, खीरा, आम बहुत भाता है।

रूप और रङ्ग के अनुसार सुओं की कई जातियाँ होती हैं।

(३) मछली

मछली जलचारी प्राणी है। जलाशयों में अनेक प्रकार की मछलियाँ पाई जाती हैं। मछली की देह पर बहुधा सफेद रङ्ग के गोल चमकदार छिलके रहते हैं। इसका सिरा त्रिभुज के समान

होता है। मछली की आँख गोल और बड़ी होती है। उन पर पलक नहीं होते। मछली के गर्दन भी नहीं होती। मुँह चोंगे के समान होता है और उसके भीतर छोटे पैने दाँत रहते हैं।

मछलियों के धड़ और सिर के मिलाप की जगह, दोनों ओर गलफड़े होते हैं जिनसे वे साँस लेती हैं।

मछलियों की देह पर कई जोड़ी पर होते हैं। कई मछलियों के फेफड़ों के पास एक एक पर होता है। ये दोनों छाती के पर कहलाते हैं। इसके नीचे पेट के पर रहते हैं। बहुधा पीठ की धार पर भी दो पर होते हैं और एक पर पूँछ के पास रहता है। इन परों के द्वारा मछली पानी में तैरती और उसमें ऊपर नीचे आती-जाती है।

मछली का लोहू ठंडा होता है। यह मनुष्यों, चौपायों और पक्षियों के समान, हवा में नहीं रह सकती। पानी के बाहर निकलने पर तड़प-तड़प कर मर जाती है। मछली पानी के छोटे-छोटे कीड़े और अनाज खाकर जीती है। बड़ी-बड़ी मछलियाँ छोटी मछलियों को खा जाती हैं।

लोग मछलियों का शिकार करते हैं और इन्हें खाते हैं। बड़े-बड़े समुद्रों के किनारे मछलियों का बड़ा व्यापार होता है। एक प्रकार की मछली का तेल दवाई के काम में आता है।

(ख) वनस्पति

(१) नारियल का पेड़

नारियल का पेड़ ताड़ और खजूर के पेड़ों के समान होता है। यह चालीस पचास हाथ की ऊँचाई तक बढ़ता है। इस पेड़ में डालियाँ नहीं होतीं। इसकी चोटी पर दस-बारह लम्बे और बड़े पत्तों का छाता सा तना रहता है।

इस पेड़ के पींड़ पतली और सीधी होती है। उसमें पत्ते नहीं होते। पींड़ की लकड़ी नरम रहती है। उसमें रेशे होते हैं।

पींड़ में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर काले घेरे होते हैं। इन्हें गिनकर पेड़ की उमर जान सकते हैं।

नारियल के पत्ते चार-पाँच हाथ लम्बे और डेढ़-दो हाथ चौड़े होते हैं। साल में दो बार पुराने पत्ते झड़ जाते हैं और उनके स्थान में नये पत्ते निकलते हैं। इसका फूल सफेद रंग का होता है।

इसके फल को नारियल कहते हैं। इसका आकार अंडे के समान होता है। यह एक ओर को कुछ नोकदार होता है। फल के ऊपर दो छिलके रहते हैं—एक जटा वाला और दूसरा कड़ा। इसके छिलके के भीतर गरी या खोपरा रहता है। नये फल के भीतर रस भरा रहता है।

खोपरा खाने के काम आता है। इससे मिठाई भी बनती है। इसका पानी पिया जाता है अथवा उससे खीर बनाते हैं। इससे तेल निकाला जाता है जो बहुधा सिर में डालने के काम आता है।

नारियल के रेशों से रस्सी बनाई जाती है। भीतर के छिलके प्याले और हुक्के बनाने के काम आते हैं। पत्तों से छप्पर, छतरियाँ और बुहारियाँ बनाई जाती हैं। पींड़ की लकड़ी से कड़ियाँ, बल्लियाँ, डोंगे आदि बनाते हैं।

(२) गेहूँ का पौधा

गेहूँ का पौधा घास की जाति का है। यह तीन फुट से लेकर पाँच फुट तक ऊँचा बढ़ता है। कच्ची अवस्था में इसका रङ्ग हरा रहता है; परन्तु पकने पर पीला हो जाता है। डंडी नली के समान गोल और पोली रहती है। इसमें थोड़े-थोड़े अन्तर पर गाँठें रहती हैं। गेहूँ की जड़ रेशेदार होती है। जड़ की नसें पौधे को मिट्टी में साधे रहती हैं।

इस पौधे के पत्ते लम्बे और नोकदार होते हैं। छूने में ये खुरखुरे लगते हैं। इसकी नसें समानान्तर होती हैं। डंडी में जहाँ गाठें

होती हैं वहीं से पत्ते निकलते हैं। फूल डंडी के सिरे पर निकलते हैं और बहुत छोटे होते हैं। इनका रंग सफेद होता है।

फूलों के झड़ जाने पर बालें निकलती हैं। एक डंडी में एक ही बाल आती है। उसमें बीज अर्थात् दाने रहते हैं। इसका आकार छोटे अंडे के समान गोल होता है। इसके ऊपर भूरे रंग का छिलका होता है। शुरू में दाने छोटे और हरे रहते हैं, परन्तु पकने पर कुछ बड़े और सुनहरे रंग के हो जाते हैं। तब इनमें कड़ापन भी आ जाता है। गेहूँ बीच में चिरा सा दिखता है।

गेहूँ मनुष्यों का मुख्य भोजन है। इससे कई प्रकार की खाने की चीजें बनाई जाती हैं, जैसे, रोटी, पूरी, हलुआ इत्यादि। गेहूँ का भूसा ढोरों के खाने के काम आता है।

(३) नारंगी

नारंगी निम्बू की जाति का फल है। इसका आकार गोल होता है। यह ऊपर और नीचे कुछ दबी सी रहती है। नारंगी पहले हरी और कड़ी रहती है, पर पीछे पकने पर पीली और नरम हो जाती है।

इसका छिलका मोटा होता है। यह बाहर खुरदरा और भीतर चिकना रहता है। बाहरी रंग पीला और भीतरी रंग सफेद होता है। छिलका गूदे से चिपका हुआ नहीं रहता, इससे यह सहज में निकाला जा सकता है। छिलके के बाहरी भाग में रस से भरी बहुत छोटी थैलियाँ सी होती हैं जिनके कारण उसका आकार खुरदरा हो जाता है। यह रस एक प्रकार का तेल है, क्योंकि इसमें चिकनाई रहती है और यह जलाने से जल जाता है।

छिलके के भीतर नरम गूदे की अलग-अलग कलियाँ होती हैं जो एक-दूसरे से सटी हुई रहती हैं। प्रत्येक कली के चारों ओर

एक पतली झिल्ली होती है। इसके भीतर रस से भरी हुई छोटी-छोटी थैलियाँ रहती हैं। थैलियों में नारंगी के बीज रहते हैं।

नारंगी का गूदा खाने के काम आता है। इसका स्वाद मीठा होता है। कोई कोई नारंगी खटमिट्ठी होती है।

(ग) खनिज पदार्थ

चाँदी

चाँदी खदान से निकाली जाती है। उस समय इसका रङ्ग मटमैला रहता है। चाँदी को आग में गलाकर शुद्ध करते हैं। तब इसका रंग सफेद और चमकदार हो जाता है। यह धातु सोने से कड़ी और ताँबे से नरम होती है।

चाँदी में जंग नहीं लगती, पर गन्धक के तेल से यह काली पड़ जाती है। मैली हो जाने पर इसे आग में तपाकर या खटाई में डालकर उजली कर लेते हैं। चाँदी को हथौड़े से पीट कर फैला सकते हैं और इसका बहुत बारीक तार बना सकते हैं। इसको पीट कर पतला भी कर सकते हैं यहाँ तक कि बहुत ही पतले पत्ते बनाये जा सकते हैं। इन्हें पान पर लपेटते हैं और दवाई के काम में भी लाते हैं।

चाँदी के गहने बनाये जाते हैं। धनवान लोग इसके बर्तन बनवाते हैं। इसके सिक्के भी बनाये जाते हैं, पर इसके लिये इसमें कुछ ताँबा मिलाया जाता है। वैद्य लोग चाँदी की भस्म बनाकर ओषधि के काम में लाते हैं।

भारत में कहीं-कहीं चाँदी की खदानें हैं, पर बहुत सी चाँदी विदेश से आती है।

(घ) प्राकृतिक पदार्थ

बादल

बादल जलाशयों के पानी की भाप से बनते हैं। ये आकाश में कई मीलों की ऊँचाई पर रहते हैं। कभी-कभी ये स्थिर और कभी

चलते हुए दिखाई देते हैं। बादल कभी-कभी अलग-अलग रहते हैं और कभी-कभी चलकर एक दूसरे से मिल जाते हैं। बरसात के दिनों में बहुत बादल आते हैं। कभी-कभी तो सारा आकाश बादल से छा जाता है।

साधारण बादल सफेद रंग के और बरसात के काले रंग के होते हैं। सबेरे सन्ध्या के समय सूर्य के प्रकाश के कारण बादलों में कई रंग दिखाई देते हैं। कोई-कोई बादल कपास के ढेर के समान और कोई-कोई लकीरों के रूप में रहते हैं।

वर्षा के बादलों में आपस की रगड़ के कारण बिजली उत्पन्न होती है जिससे वे गरजते और चमकते हैं। बादल कभी-कभी लुप्त हो जाते हैं और फिर कुछ समय के बाद दिखाई देने लगते हैं। तेज हवा के चलने से बादल फट जाते हैं और आकाश निर्मल हो जाता है।

बादलों के कारण ग्रीष्म-ऋतु में कुछ समय के लिए ठंढक और शीत ऋतु में गर्मी हो जाती है। बादलों से जो मेह बरसता है उससे पेड़-पौधे बढ़ते हैं और जलाशयों में जल भरता है। यही जल सूर्य की गर्मी से भाप होकर बादल बनता है।

(ङ) कृत्रिम पदार्थ

छाता

मनुष्य मेह और धूप से अपनी रक्षा करने के लिये छाते का उपयोग करते हैं। इनमें लकड़ी की एक सीधी डंडी के चारों ओर एक पोंगरी द्वारा लोहे की काड़ियाँ लगाई जाती हैं। इन काड़ियों में जुड़ी हुई दस-बारह कमानियाँ रहती हैं जिनके ऊपर कपड़े की खोल चढ़ाई जाती है।

छाते की डंडी एक छड़ी के समान होती है। यह लोहे या लकड़ी की बनी रहती है। डंडी में तार के बने दो कुन्दे लगे

रहते हैं, एक डंडी के ऊपरी भाग में और दूसरा नीचे के भाग में। छाता खोलते समय काड़ियों की पोंगरी कुन्दे के ऊपर ठहराई जाती है और बन्द करते समय उसे नीचे कुन्दे में फँसा देते हैं।

कमानियों की ऊपरी नोंकें डंडी के सिरे से नीचे की गुजरिया में तार से एक साथ फँसा दी जाती हैं और नीचे की नोंकें खोल के किनारे पर अलग-अलग सी दी जाती हैं। कमानियों के बीचों-बीच काड़ियाँ लगी रहती हैं जो छाता खोलने मे कमानियों को साधे रहती हैं।

छाते का टप बहुधा काले कपड़े का होता है। यह उतनी ही पट्टियों का बना रहता है जितनी कमानियाँ रहती हैं। टप ठीक ठीक जमाने के लिए पट्टियों की सिलाई का एक-एक जोड़ एक-एक कमानी पर रक्खा जाता है। उसका सिरा कमानी के नीचे के सिरे में सी देते हैं।

खुले छाते के द्वारा मेह-धूप से रक्षा होती है। बंद छाता छड़ी के समान काम में लाया जाता है। छाता आदर का चिह्न भी है

(च) स्थान

धर्मशाला

यात्रियों और गरीबों के ठहरने के लिए धनी लोग बहुधा धर्मशालायें बनवा देते हैं। कोई-कोई धर्मशालायें छोटी और कोई बड़ी होती हैं। कोई एक खंडवाली और कोई दो या तीन खंडवाली होती हैं। धर्मशालाओं में बहुत सी कोठरियाँ रहती हैं जिनमें लोग अकेले अथवा कुटुम्ब-सहित ठहर सकते हैं। वहाँ उनके निस्तार का सब सुभीता रहता है। पास ही कुआँ अथवा [illegible] और रसोई-घर रहता है। धर्मशाला के पास ही आटे दाल की दूकानें रहती हैं।

कई-एक धर्मशालाओं में बना-बनाया कच्चा और पक्का भोजन भी मिलता है। वहाँ नौकर-चाकर भी रहते हैं जो दाम देने प

टहल कर देते हैं। किसी-किसी धर्मशाले में भाड़े पर रसोई के बर्तन और पलंग, कुर्सी आदि मिल सकते हैं।

धर्मशाला का प्रबन्ध करने के लिये मैनेजर और चौकीदार रहते हैं। वे यात्रियों का सुभीता करा देने का बहुत ध्यान रखते हैं। वे किसी चोर या बदमाश को धर्मशाला के भीतर नहीं आने देते।

किसी-किसी धर्मशाला में गरीबों को स्थान और भोजन भी दिया जाता है।

(छ) प्राकृतिक दृश्य

सवेरा

सूर्य के उदय होने के पहले आकाश में पूर्व की ओर लाली छा जाती है। उस समय ठंढी हवा चलती है। पेड़ों के पत्ते हिलते तथा फूल खिलते हैं। चिड़ियाँ चहचहाती हैं और आहार की खोज में इधर-उधर उड़ती हैं। कौए घोंसले से आकर काँव काँव करते हुए घरों और पेड़ों पर बैठते हैं। नगर और वन के पशु भी इस समय आहार की खोज में निकलते हैं। सूर्य के निकलने के कुछ समय पहले से उजेला होने लगता है। इसे देखकर मुर्गा बोलता है।

सूर्योदय होने पर चारों ओर धूप फैल जाती है। धीरे-धीरे सूर्य आकाश में चढ़ता हुआ दिखाई देता है। जल-स्थानों में सूर्य की परछाईं पड़ती है और पानी हिलने से वह हिलती हुई दिखाती है। मैदानों में सूर्य किसी पर्वत के पीछे से निकलता दिखाई देता है। सूर्य की किरणें बादलों पर पड़ने से उनमें कई प्रकार के रंग दिखाते हैं।

कभी-कभी जाड़े के दिनों में सवेरे घास और पेड़ों के पत्तों पर ओस की बूँदें दिखाती हैं। कभी-कभी धुएँ के समान कुहरा छा जाता है। गर्मी की ऋतु में सवेरे का समय बड़ा सुखदायक होता है।

(ञ) प्राकृतिक घटना

गोमती की बाढ़*

पाँच-छः वर्ष पहले लखनऊ और दूसरे स्थानों में गोमती की भारी बाढ़ आई थी। शहर के अनेक भागों में जल भर गया था। सैकड़ों घर गिर पड़े थे। गोमती के किनारे के कई गाँव डूब गये थे। शहर की सड़कों पर नावें चलने लगी थीं। नदी के बहाव में चक्कियाँ, छप्पर, बाँस, किवाड़ इत्यादि वहते हुए दिखाई देते थे। अनाज के सैकड़ों बोरे गोदामों में रक्खे हुए पानी में डूब गए। हजारों किसान बिना घर-द्वार के हो गये। लोगों ने पहाड़ियों पर, टीलों और पेड़ों पर चढ़कर अपनी रक्षा की थी। सैकड़ों पशु और अनेकों मनुष्य डूब कर मर गये। सैकड़ों खेत नष्ट हो गये।

इस समय कई परोपकारी सज्जनों ने बाढ़ से पीड़ित मनुष्यों की सहायता की थी। फौजी सिपाहियों ने एक जगह पेड़ पर चढ़े हुए ५० स्त्री-पुरुषों को बचाया था। लखनऊ के बाढ़-पीड़ित लोगों को आश्रय देने के लिये सरकार की ओर से छोलदारियाँ खड़ी कर दी गई थीं। कई रईसों ने अपने मकान इन लोगों के रहने के लिये दे दिये थे। डाक्टर लोग इन लोगों के स्थानों पर जाकर ओषधि देते थे। लोगों के आने-जाने के लिये नावों और मोटर का प्रबन्ध किया गया था। कई लोगों के लिए झोपड़े भी खड़े कर दिये गये थे।

बाढ़ के बाद बहुत दूर तक मकानों के खंडहर दिखाई देते थे। सड़े हुए अनाज और मरे हुए पशुओं की दुर्गन्ध चारों ओर फैली हुई थी। लोग अपनी-अपनी चीजें ढूँढ़ने के लिये खंडहरों को खोदते थे। मरे हुये मनुष्यों के लिये उनके नातेदार रोते थे। इस बाढ़ से लोगों को बहुत समय तक कष्ट भोगना पड़ा।

---

*आश्विन सं० १९८१ की माधुरी से संगृहीत।

वर्णन सिखाने के लिये विषयों के खंड

[१] गाय

(१) उपयोगी जानवर (२) सींग (३) आँखें
(४) कान (५) मुँह (६) दाँत
(७) गर्दन (८) शरीर-डील (९) चमड़ा
(१०) रङ्ग (११) ऐन (१२) पूँछ
(१३) टाँगें (१४) खुर (१५) दूध
(१६) स्वभाव (१७) उपयोग

[२] सुआ

(१) मनोहर पक्षी (२) रङ्ग (३) चोंच-नथने
(४) जीभ (५) कंठी (६) टाँगें
(७) पंजे (८) नख (९) पूँछ
(१०) रटना (११) स्वभाव (१२) उपयोग

[३] मछली

(१) जलचारी प्राणी (२) देह—छिलके (३) सिर
(४) आँखें (५) मुँह (६) दाँत
(७) गर्दन (८) गलफड़े (९) पर
(१०) लोहू (११) स्वभाव (१२) उपयोग

[४] नारियल का पेड़

(१) ताड़ की जाति का पेड़ (२) ऊँचाई
(३) पींड़ (४) डालियाँ
(५) पत्ते (६) फूल
(७) फल (८) उपयोग

[५] गेहूँ का पौदा

(१) घास की जाति का पौदा (२) ऊँचाई
(३) रङ्ग (४) डंडी
(५) पत्ते (६) फूल
(७) बालें (८) दाने
(९) भूसा (१०) उपयोग

[६] नारंगी

(१) निम्बू की जाति (२) आकार
(३) छिलका (४) गूदा
(५) उपयोग

[७] चाँदी

(१) खनिज पदार्थ—धातु (२) रङ्ग
(३) शुद्धि (४) पीटने से लम्बी होने वाली
(५) पीटने से पतली होने वाली (६) उपयोग
(७) स्थान

[८] बादल

(१) बनावट (२) ऊँचाई (३) चाल
(४) रूप (५) रङ्ग (६) बिजली
(७) उपयोग

[९] छाता

(१) उपयोग (२) डंडी (३) कमानियाँ
(४) काड़ियाँ (५) गुजरियाँ (६) कुन्दे
(७) खोल या टप (८) उपयोग

[१०] धर्मशाला

(१) उपयोगी स्थान (२) बनावट (३) विस्तार
(४) सुभीता (५) प्रबन्ध (६) लाभ

[११] सवेरा

(१) सूर्योदय के पहले की अवस्था
(२) सूर्योदय के समय की अवस्था
(३) सूर्योदय के पश्चात् की अवस्था
(४) पशु-पक्षियों का कार्य
(५) जाड़े और गर्मी की ऋतु में दृश्य

[१२] गोमती की बाढ़

(१) पानी की बाढ़
(२) सड़कों की दशा
(३) घरों की दशा
(४) गाँवों की दशा
(५) चीजों का बहना
(६) अनाज का नष्ट होना
(७) मनुष्यों और पशुओं की हानि
(८) खेती का नाश
(९) लोगों की दुर्दशा
(१०) लोगों को आश्रय देने का प्रबंध
(११) ओषधि का प्रबंध
(१२) बाढ़ के बाद का दृश्य

(३) देखी हुई वस्तुओं का वर्णन सिखाने की रीति

देखी हुई वस्तु का वर्णन करना सिखाने के लिये प्रत्येक वस्तु अथवा उसका चित्र सामने रखना आवश्यक है। विद्यार्थी चुनी हुई वस्तु के किसी एक मुख्य अवयव का अवलोकन करें और शिक्षक उनसे उस पर प्रश्न करें। इसी प्रकार विषय के मुख्य-मुख्य अवयवों का अवलोकन किया जावे और उन पर प्रश्न पूछे जायँ। अन्त में शिक्षक श्याम-पट पर विषय के मुख्य खण्ड लिख देवें। उनके आधार पर लड़के उस विषय की रचना लिखें।

विद्यार्थियों की लिखित रचना को शिक्षक नियम-पूर्वक शुद्ध करें।

किसी वस्तु का वर्णन करना उसके रूप और गुण को प्रकट करना है—चाहे वह प्राणी हो या पदार्थ, चाहे दृश्य हो अथवा घटना। जिस वस्तु का वर्णन करते हैं उसके प्रत्येक अवयव और गुण का सूक्ष्म अवलोकन और वर्णन करना कठिन है इसलिये उसके मुख्य-मुख्य अवयवों का स्थूल वर्णन किया जाता है जिससे श्रोताओं अथवा पाठकों को उसका आवश्यक ज्ञान प्राप्त हो जावे। आकार और गुणों के वर्णन के अतिरिक्त किसी वस्तु के विषय में और जो कुँछ कहा जाता है वह उसका विवेचन कहलाता है जो वर्णन से भिन्न होता है। इस परिच्छेद में वस्तुओं का केवल शुद्ध वर्णन दिया गया है। यद्यपि वर्णन के साथ बहुधा कथन सम्मिलित रहता है, तथापि यहाँ उसे अलग रखने का प्रयत्न किया गया है।

अभ्यास (२)

नीचे लिखे विषयों पर विद्यार्थी वर्णनात्मक लेख लिखें—

(१) घोड़ा, गधा, कुत्ता, बिल्ली, भैंस, बकरी, ऊँट।

(२) कौआ, मैना, कबूतर, चील, मोर।

(३) मेंढक, साँप, मकड़ी, जोंक।

(ख) वनस्पति

(१) पीपल का पेड़, नीम का पेड़, जामुन का पेड़, बड़ का पेड़, खजूर का पेड़।

(२) चने का पौधा, धान का पौधा, कपास का पौधा, तुलसी का पौधा, चाय का पौधा।

(३) फल—आम, केला, अमरूद, बेल, अनार।

(ग) खनिज पदार्थ

सोना, ताँबा, लोहा, सीसा, गंधक।

(घ) प्राकृतिक पदार्थ

पानी, हवा, भाप, बर्फ, चन्द्रमा।

(ङ) कृत्रिम पदार्थ

घड़ी, कुर्सी, मेज, कागज, आइना, साबुन, सुई, गाड़ी, पुस्तक, काँच।

(च) स्थान

(१) नदी, पहाड़, झील, जंगल, मरुस्थल।
(२) पाठशाला, बगीचा, मन्दिर, घर, बाजार।

(छ) प्राकृतिक दृश्य

संध्या, रात, वर्षा, इन्द्रधनुष, सूर्य-ग्रहण।

(ज) घटना

परीक्षा, खेल, सभा, मेला, बरात, जुलूस।

चौथा परिच्छेद

ढाँचे का विस्तार

(क) ढाँचे के विस्तार का उदाहरण—

(१) बकरी

ढाँचा

(१) भूमिका—उपयोगी पालतू जानवर।
(२) बनावट—
ऊँचाई—दो तीन फुट।
सिर—छोटा, खड़ा।
आँखें—पुतली तिरछी, दृष्टि कोमल।
सींग—लम्बे, चपटे मुड़े हुये, पोले।
कान—लम्बे चलायमान।
मुँह और दाँत।
डाढ़ी—ठुड्ढी के नीचे बालों का गुच्छा नर में लम्बा।

गर्दन—लम्बी, मजबूत।
टाँगें—पतली, लम्बी।
पैर—खुर फटे हुये।
पूँछ—छोटी।
(३) स्वभाव—साहसी, चपल, स्वावलम्बी, दुष्ट।
(४) आहार—पत्ते, घास, अनाज, फल, खाने में असावधान।
(५) उपयोग—बकरी का दूध; बकरे का मांस; छोटी गाड़ी में जोतना; जूते में चमड़े का उपयोग।
(६) विशेष—गाय के समान जुगाली करने वाला जानवर।

विस्तार

बकरी पालतू और उपयोगी जानवर है। इसकी ऊँचाई दो-ढाई फुट के लगभग होती है। इसका सिर शरीर के मान से छोटा होता है; पर वह बहुधा खड़ा रहता है। बकरी के कान लंबे होते हैं और हिलाने से हिल सकते हैं। इसके सींग लंबे, चपटे और पीछे को मुड़े हुये रहते हैं। इनकी जड़ें सिर में मजबूत और पास-पास रहती हैं। ये सींग पोले होते हैं। बकरी की आँखें गाय की आँखों के समान रहती हैं और दृष्टि कोमल होती है। इसका मुँह छोटा होता है और ऊपर जबड़े में काटने के दाँत नहीं रहते।

बकरी के शरीर में एक विशेषता यह है कि उसके डाढ़ी होती है। वह ठुड्ढी के नीचे बालों के झब्बे के रूप में रहती है। नर की डाढ़ी मादा की डाढ़ी से कुछ अधिक लम्बी होती है।

बकरी की गरदन लम्बी और मजबूत होती है; जिसके कारण इसका सिर खड़ा रहता है। इसकी देह हल्की होती है। यह ऊँचे स्थानों पर सरलता से चढ़-उतर सकती है। टाँगें लम्बी और पतली होती हैं; पर वे मजबूत रहती हैं। इसके खुर फटे हुए होते हैं। पूँछ छोटी होती है।

बकरी का स्वभाव चपल और साहसी होता है। बकरियाँ बहुधा झुण्ड में नहीं रहतीं। सताने पर बकरी सींग मार देती है।

यह घास, पत्ते, अनाज और फल खाती है। इसे इस बात का ध्यान नहीं रहता कि आहार की चीजें अच्छी दशा में हैं या नहीं। कँटीले पेड़ों की पत्तियाँ भी खा जाती है।

बकरी का दूध गाय के दूध से हल्का और अधिक गुणकारी होता है। बकरे का मॉस खाने के काम आता है। उसके चमड़े से जूते बनाये जाते हैं। बकरे कभी-कभी बच्चों की छोटी गाड़ी में जोते जाते हैं।

बकरी जुगाली करने वाला पशु है।

(ख) ढॉचे का विस्तार करने की रीति

ढाँचे में एक-एक वाक्य के लिये बहुधा संक्षेप में एक शब्द लिख दिया जाता है, इसलिये ढाँचे के एक-दो शब्दों पर विचार कर उनसे सार्थक और उपयुक्त वाक्य बनाना चाहिये। ढाँचे का एक एक खंड बहुत करके विषय का खंड होता है, अतएव एक खंड के विस्तार को एक अनुच्छेद में रखना उचित है। यदि खंड छोटे हों तो दो तीन सम्बन्धी खंडों का एक अनुच्छेद बनाया जाय। अनुच्छेद में कोई एक बात बार-बार न लिखो जावे और न वाक्य में बार-बार एक ही शब्द लाया जावे।

कुछ समय तक शिक्षक स्वयं विद्यार्थियों के लिये ढाँचे बनाकर श्याम-पट पर लिख दिया करें और विद्यार्थी इसके आधार पर लेख लिखें।

विद्यार्थी ढॉचे के आधार पर जहाँ तक हो पहिली बार कच्चा लेख लिखें और फिर उसे अपने मन से सुधार कर शुद्ध रूप में लिखें। कुछ अधिक अभ्यास हो जाने पर शिक्षक विद्यार्थियों की सहायता से ढाँचा बना कर लिखे और विद्यार्थी पूर्ववत् उस ढाँचे का उपयोग करें। इसके पश्चात् विद्यार्थी स्वयं ढाँचा बनाने का प्रयत्न करें और शिक्षक उसका संशोधन कर देवें। अन्त में विद्यार्थियों को बिना शिक्षक की सहायता के स्वयं ढॉचा और उसके आधार पर लेख लिखने का अभ्यास करना चाहिए।

ढाँचा बनाने के लिये किसी भी विषय पर विचार करने की आवश्यकता है। विचार करने से विद्यार्थी यह जान सकते हैं कि उस विषय में क्या-क्या कहना चाहिये और उसे कहाँ ढूँढ़ना चाहिये। इसके पश्चात् उन्हें अवलोकन करके या पुस्तकें पढ़कर अथवा शिक्षक से पूछकर विषय का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।

अभ्यास

नीचे लिखे ढाँचों का विस्तार लिखो।

(१) गिलहरी

(१) कुतरने वाला जानवर—चूहे और खरहे की जाति।

(२) बनावट—

लम्बाई—९-१० इंच

सिर—गोल, माथा—चपटा, थूथना—नुकीला, नाक—उभरी हुई, आँखें—बड़ी, काली, माथे के पास। कान—खड़े, लंबे, त्रिभुजाकार, नोक पर छोटा गुच्छा, मूछें—थूथने के दोनों ओर, दाँत—पैने, छेनी के समान, प्रत्येक जबड़े में दो काटने वाले। ऊपर का ओंठ कटा हुआ। गर्दन—पतली, शरीर—पतला, बालों से ढँका हुआ। रंग भूरा, लाल। पूँछ शरीर के बराबर झबरी। पैर—पिछले बड़े, अगले छोटे, उछलने के योग्य। प्रत्येक पैर में पाँच लम्बी उँगलियाँ और नख।

(३) स्वभाव—चंचल, चालाक, साहसी।

(४) आहार—फल, कोपलें, कीड़े, अंडे।

(५) बसेरा—पेड़ों की खोल, घोंसला।

(६) बच्चे—पेट से पैदा होते हैं, माँ का दूध पीते हैं।

(२) केले का पेड़

(१) पानी का पौधा—फल एक वर्ष में

(२) बनावट—

ऊँचाई—१०-१२ फुट।

पोंड—मोटी, सीधी, नरम, मोटे बक्कलों की परतें, बीच में गाभा, पनीली।

डालियाँ—नहीं होतीं।

पत्ते—४-५ फुट लम्बे, नसें खड़ी, पेड़ के ऊपरी भाग में।

डंडी—नरम और पनीली।

फल—सफेद और पीले, लम्बे, लाल मोटी पंखुड़ियों से ढँके हुये पेड़ के बीच से निकलते हैं।

फल—लम्बे और हरे, पकने पर पीले, किसी-किसी के हरे, कई आकार और जाति के। डंठल कड़ा। किसी-किसी में बीज।

छिलका—मोटा और नरम।

(३) उपयोग और लाभ—

फल—कच्चे तरकारी में काम आते हैं पके खाये जाते हैं।

पत्ते—भोजन परोसने के लिए उपयोगी।

(४) भारत के कई भागों में पानी के किनारे होता है।

(३) ताँबा

(१) खनिज पदार्थ—धातु।

(२) आकार—

रंग—लाल, साफ होने पर चमक।

जंग—खटाई और नमक लगने से हरी जंग लग जाती है जो एक विष है।

वजन—पानी से नौ गुना भारी।

पत्र बनाना—पीटने से पतलापत्र बन सकता है।

तार खींचना—लम्बा तार खींचा जा सकता है, मजबूत होता है।

उष्णता—जल्द गरम होता है और कड़ी आँच से पिघलता है

(३) उपयोग

सिक्के—आवाज।

वर्तन—कलसे, रकाबी इत्यादि कलई, जहाजों की तली में चादर।

दूसरी धातुएँ—तांवे और जस्ते के मेल से पीतल, तांवे और रांगे के मेल से काँसा।

(४) पहाड़

(१) पृथ्वी का बहुत ही ऊँचा भाग, कुछ नीचा भाग पहाड़ी।

(२) अलग-अलग पहाड़, पर्वत श्रेणी।

(३) दर्रे, घाटियां, सपाट मैदान।

(४) बनने का कारण—भूकंप, पृथ्वी के भीतरी भाग का ठंढा होना।

(५) कहीं-कहीं सघन वन, जंगली जानवरों का निवास।

(६) उपयोगी।

पत्थर, धातु, लकड़ी, व्यापार, आरोग्य-स्थान, वर्षा, नदियाँ, ओषधियाँ, देश की रक्षा, स्वाभाविक सीमा।

(७) पहाड़ी लोग निरोगी, बलवान, परिश्रमी, साहसी।

(५) हवा

(१) पानी के समान जीवन के लिए उपयोगी पदार्थ, अदृश्य।

(२) पतली, हलकी, सर्वत्र पाई जाती है।

(३) वजन, दबाव, गर्मी से फैलना, ठंड से सिकुड़ना।
(४) हवा चलने के कारण, भारी आग या सूर्य की गरमी।
(५) हवा के रूप—आँधी, बवंडर, झोंका, शीतल, मन्द, सुगन्ध, उष्ण।
(६) उपयोग—वर्षा जहाज चलाना, कुआँ और दुर्गन्ध उड़ना, प्राणियों और वनस्पतियों को जिलाना, मोटरों और साइकिलों के पहियों में भरना, पवन चक्की।
(७) हानियाँ—पेड़ों को उखाड़ना, जहाजों को डुबाना, हवाई जहाजों को भटकाना।

पाँचवाँ परिच्छेद

चिट्ठी लिखना

पुरानी शैली के पत्र

(क) उदाहरण

कौटुम्बिक और सामाजिक

(१) पुत्र की ओर से पिता को

(शिक्षा के विषय में)

सिद्धि श्री प्रयाग शुभस्थान श्री ६ सर्वोपरि-विराजमान परम पूज्य पिता जी को कानपुर से चरण-सेवक रामजीलाल का सादर प्रणाम स्वीकृत हो। मैं यहाँ आपकी कृपा से कुशल-पूर्वक हूँ और आप लोगों की कुशल ईश्वर से मनाता हूँ। यहाँ के विद्यालय में बहुत अच्छी पढ़ाई होती है। सब शिक्षक योग्य हैं और पद्धति के अनुसार पढ़ाते हैं। विद्यार्थियों के साथ उनका व्यवहार शिष्टता का है। सहपाठी लोग भी आपस में अच्छा व्यवहार करते हैं। इस महीने के अन्त में हम लोगों की परीक्षा होगी। उसके लिये मैं प्रयत्न कर रहा हूँ। मुझे ईश्वर की कृपा तथा आप लोगों के

आशीर्वाद से सफलता की पूरी आशा है। परीक्षा केप श्चात् मैं उसके विषय में लिखूँगा।

माता को सादर प्रणाम तथा भाइयों को प्यार और आशीर्वाद पहुँचे। शेष शुभ।

स्थान—नई सड़क, कानपुर। मिती पौष शुक्ल १, मंगलवार सं० १९८६। ह० रामजीलाल।

पता
(पुरानी शैली के अनुसार)

टिकट

७४॥ चिट्ठी शहर प्रयाग खास
मुहल्ला अतरसुइया में पहुँच कर
पं० रामकृपाल त्रिपाठी को मिले।

(२) पुत्र की ओर से माता को
(खर्च के विषय में)

सिद्धि-श्री आगरा शुभ स्थान सर्वोपरि-विराजमान परम-पूज्यनीया श्री ६ माता जी को दिल्ली से चरण-सेवक देवकी नंदन का सादर प्रणाम पहुँचे। आपके आशीर्वाद से मैं यहाँ अच्छी तरह हूँ, ईश्वर आप लोगों को कुशल-पूर्वक रक्खे। आपका कृपा-पत्र मिला। पढ़ने से परम आनंद हुआ। आपने मुझसे जो खर्च के विषय में पूछा है सो मैं आपको बड़े प्रेम से उसके विषय में लिखता हूँ मुझे यहाँ महीने में लगभग २५) पच्चीस रुपये खर्च पड़ते हैं। ५) पाँच रुपये मकान का किराया लगता है और २) दो रुपये कहारिन को टहल के लिए देने पड़ते हैं। भोजन में १५) पंद्रह रुपये खर्च होते हैं। नाई और धोबी को २) दो रुपये लगते हैं। १) एक रुपया फुटकर खर्च में जाता है। तनख्वाह के बाकी २५) पचीस रुपयों में

से २०) बीस रुपये मैं आपके पास भेजता हूँ और पाँच रुपये हर महीने बैंक में जमा कर देता हूँ। इन रुपयों को मैं वर्ष के अन्त में आवश्यक कपड़े और जूते मोल लेने में खर्च करता हूँ। मुझसे जहाँ तक बनता है मैं खर्च में किफायत करता हूँ और कभी-कभी ५) पाँच रुपये के बदले ६) या ७) सात रुपये जमा करता हूँ। आशा है, आप मेरे खर्च को अनुचित न समझेंगी।

आजकल यहाँ ठंड अधिक पड़ती है। शहर में खाँसी और बुखार का जोर है। शेष कुशल है। छोटे भाई को प्यार और आशीर्वाद। इति।

स्थान—नया कटरा, दिल्ली। मिती पौष शुक्ल २, बुधवार, सं० १९८६। ह० देवकीनन्दन।

पता

टिकट

७४।। चिट्ठी शहर आगरा खास
शीतला गली पहुँचकर
श्रीमती सुशीला देवी को मिले।

(३) शिष्य की ओर से गुरु को
(पुस्तक के विषय में)

सिद्ध श्री मथुरा शुभस्थान सर्वोपरि विराजमान सर्वगुण संपन्न श्री ६ परम पूज्य गुरु जी को लखनऊ से चरण-सेवक इन्द्रदत्त का सादर प्रणाम पहुँचे। उभय ओर कुशल हो। मैं आपको एक कष्ट देता हूँ और उसके लिए क्षमा प्रार्थना करता हूँ। मैंने छोटे लड़कों के लिये कहानियों की एक पुस्तक लिखी है। आपसे विद्या सीख कर मैंने इस पुस्तक में उसका उपयोग किया है। अब मेरी प्रार्थना

है कि आप कृपा कर उस पुस्तक का संशोधन कर दें। पुस्तक लिखने में यह प्रथम प्रयत्न है, इसलिये उसमें कई भूलों की सम्भावना है। आशा है, आप मेरी प्रार्थना को स्वीकृत कर मुझे इस प्रयत्न में सहायता देंगे। आपका कृपा-पत्र आने पर मैं हस्त-लिखित प्रति आपकी सेवा में भेज दूँगा। कृपया उत्तर दीजियेगा। आपकी सिफारिश से यहाँ की संस्कृत-पाठशाला में अध्यापकी मिल गई है। आपके आशीर्वाद से काम-काज अच्छा चल रहा है। शेष कुशल है। इति।

स्थान—संस्कृत-पाठशाला, लखनऊ। मिती पौष शुक्ल २ गुरु सं० १९८६। ह०—इन्द्रदत्त।

पता

	टिकट
७४॥ चिट्ठी शहर मथुरा, संस्कृत पाठशाला में पहुँचकर प्रधान अध्यापक साहित्याचार्य पं० रामभूषण द्विवेदी को मिले।	

(४) छोटी वहिन की ओर से वड़े भाई को

(सिलाई के विषय में)

सिद्ध श्री कानपुर शुभस्थान सर्वोपरि-विराजमान वड़े भैया को काशी से सुशीला देवी का सादर प्रणाम पहुँचे। हम सब यहाँ अच्छी तरह हैं और ईश्वर से आप लोगों की कुशल मनाते हैं। मँझले भैया का पत्र रुड़की से आया था जिसमें उन्होंने अपनी क्षेम कुशल और वार्षिक परीक्षा की सफलता के विषय में लिखा था। पिता जी अभी देहरादून ही में हैं। सुनीति बराबर पढ़ने को जाती है। पिछली परीक्षा में उसे एक किताब इनाम में मिली है।

भैया, मैंने आपके और गोकुल के लिये कुछ कपड़े तैयार किये हैं। यदि आप यहाँ आवेंगे तो मै उन्हें यहीं आपको दे दूँगी, नहीं तो डाक से भेज दूँगी। मुझे आजकल बहुत अवकाश रहता है, इसलिये मैं सिलाई का कांम किया करती हूँ। सुनीति को भी कपड़ों की मरम्मत तो हर दिन करनी ही पड़ती है। किसी में बटन लगाने का काम होता है और किसी में खोंप।

यदि मोहन भैया आवेंगे तो मैं उनके साथ आपके पास अवश्य आऊँगी। भाभी को भेंट भलाई और गोकुल को प्यार। शेष कुशल है। इति।

स्थान—दुर्गा-कुंड काशी। मिती पौष शुक्ल ४, शुक्रवार, सं० १९८६। ह० सुशीला।

पता

	टिकट
७४॥ चिट्ठी पहुँचे खास शहर कानपुर मुहल्ला नई सड़क पर श्रीयुत बाबू श्यामाचरण गुप्त को मिले।	

(५) छोटे भाई की ओर से बड़ी बहिन को

(परीक्षा के विषय में)

सिद्ध श्री ललितपुर शुभस्थान सर्वोपरि-विराजमान परम पूजनीया बड़ी जीजी को जबलपुर से बालेश्वर प्रसाद का सादर प्रणाम पहुँचे। हम सब ईश्वर की कृपा से अच्छी तरह हैं और आप सब जनों की कुशल चाहते हैं। बहुत दिनों से आपका कोई पत्र नहीं आया। इससे मन को चिन्ता है, कृपा कर पत्र पहुँचते ही उत्तर भेजियेगा। मेरी परीक्षा २० अप्रैल, सन् १९३० से आरम्भ होगी और एक सप्ताह तक रहेगी। मुझे पूरी आशा है कि मैं

परीक्षा में ऊँचे नम्बरों से पास होऊँगा। मैं बराबर स्कूल में पढ़ने जाता हूँ और घर पर भी मास्टर पढ़ाने को आते हैं। मेरे सब विषय ठीक हैं; पर गणित कुछ कच्चा है। आजकल पण्डित जी इसी विषय में अभ्यास करा रहे हैं। परीक्षा के पश्चात् मैं ज्ञानेश्वर को साथ लेकर आपके पास आऊँगा और लगभग छुट्टी भर वहाँ रहूँगा। आजकल यहाँ जाड़ा बहुत कम हो गया है। सवेरे और रात के समय कुछ ठंढ मालूम होती है; पर दोपहर को गरमी पड़ती है। शेष कुशल है। मामा तथा भाई को हम सब की ओर से प्रणाम पहुँचे। इति।

स्थान—गढ़ाफाटक, जबलपुर। मिती पौष शुक्ल ५ शनिवार, सं०—१९८९। ह० बालेश्वर प्रसाद।

टिकट

७४॥ चिट्ठी ग्राम तहसील ललितपुर
जिला झाँसी में पहुँचकर
पं० विश्वेश्वरदयाल पाठक
पोस्टमास्टर की मारफत
श्रीमती स्नेह लता देवी को मिले।

(६) छोटे भाई की ओर से बड़े भाई को
(प्रवास के विषय में)

सिद्ध श्री बम्बई शुभस्थान सर्वोपरि-विराजमान श्री ६ परम-पूज्य बड़े भाई को दिल्ली से चरण-सेवक शम्भुप्रसाद का सादर प्रणाम पहुँचे। ईश्वर दोनों ओर कुशल करें। आपका कृपा-पत्र मिला। मैं आपको अपने प्रवास का वर्णन लिखने वाला था कि आपका पत्र पहुँचा। मैं पिता जी के साथ आगरे गया था। वहाँ मैंने ताजमहल और पुराना किला देखा। वहाँ से हम लोग कानपुर गए। यह एक बड़ा शहर है और इसमें सैकड़ों बड़ी बड़ी

दूकानें हैं। कानपुर गंगा नदी के किनारे बसा है। वहाँ से हम सब प्रयाग को गये। यह शहर गंगा और यमुना के संगम पर बसा हुआ है। यहाँ भी एक बड़ा पुराना किला है। प्रयाग में लाट साहब की कोठी भी देखने योग्य है। वहाँ के दूसरे दर्शनीय स्थान विश्व-विद्यालय और म्योर महाविद्यालय हैं। शहर अमरूद के लिए भी प्रसिद्ध है।

हम लोगों ने प्रवास में भिन्न-भिन्न स्थानों के निवासियों को देखा और अलग-अलग प्रकार की भाषाएँ सुनीं। रेल में कई लोगों से जान-पहिचान हुई। सड़क के किनारे सैकड़ों गाँव मिले खेतों में अनेक प्रकार की फसलें दिखाई पड़ीं। रेल की यात्रा में ग्रामीणों को बहुधा अज्ञान के कारण बड़ा कष्ट होता है।

प्रयाग से हम लोग कुशलपूर्वक दिल्ली को लौट आये। यहाँ आजकल जाड़े की अधिकता है। शेष शुभ। माता-पिता की ओर से आशीर्वाद। इति।

स्थान—चाँदनी चौक, दिल्ली। मिती पौष शुक्ल ६, रविवार सं० १९०६। ह० शंभुप्रसाद।

(७) मित्र की ओर से
(मेले के विषय में)

स्वस्ति श्री लाहौर शुभस्थान सर्वोपमायोग श्री २ मित्रवर भाई कृष्णानन्दजी को आगरे से रामावतार का नमस्कार पहुँचे। यहाँ वहाँ शुभ हो। आपका पत्र मिला प्रसन्नता हुई। कुछ दिन पहले मैं यमुना जी का मेला देखने गया था। नदी के दोनों किनारों पर यात्रियों की बड़ी भीड़ थी। जहाँ तहाँ लोग ठहरे हुए थे। बड़े लोगों ने अपने अपने डेरे लगाये थे। एक किनारे से दूसरे किनारे तक सैकड़ों नावें यात्रियों को लाती थीं। नदी के किनारों की रेत में बहुत दूकानें लगी थीं जिनमें कपड़े, बर्तन और खाने-पीने की चीजें बिकती थीं। जिले के दूर-दूर गाँवों से यात्री लोग स्त्रियों और बाल-बच्चों के साथ मेले में आये थे। कोई स्नान

करते थे, कोई पूजा करते थे और कोई रसोई बनाते थे। बहुत से साधु भिखारी मेले में यहाँ-वहाँ माँगते फिरते थे। पुलिस का प्रबन्ध अच्छा था और स्वयंसेवक लोग भी यात्रियों की सहायता करते थे।

मेले के स्थान से कुछ हटकर सवारियों की कई कतारें थीं, जिनमें गाड़ियाँ, मोटरें, साइकिलें और डोलियाँ रक्खी हुई थीं। दूर से देखने पर नदी के दोनों किनारों पर मनुष्यों का समूह समुद्र सा दिखाई देता था। नदी का दृश्य भी बड़ा सुहावना था। जमुना जी का नीले रंग का जल बड़ी गम्भीरता से बहता था। यदि आप कभी मेले के अवसर पर यहाँ आवेंगे तो आपको भी ये सब दृश्य देखने को मिलेंगे। शेष कुशल है। इति।

स्थान—चौक, आगरा। मिती पौष शुक्ल ७, सोमवार, सं० १९८६। रामावतार।

(ख) पुरानी शैली के पत्र लिखने की रीति

(१) पुरानी शैली के पत्रों में "बड़े को" "सिद्धि श्री" और "छोटे को" स्वस्तिश्री लिखा जाता है। "श्री" की संख्या के विषय में यह दोहा प्रचलित है—

श्री लिखिये षट गुरुन को, पाँच स्वामि, रिपु चारि।
तीन मित्र द्वै भृत्य को एक पुत्र अरु नारि॥

(२) "श्री" के पश्चात् बड़े को "सर्वोपमायोग्य" अथवा "सर्वोपरि-विराजमान" और छोटे को "चिरञ्जीव" (आदर सूचक शब्द) लिखते हैं। बड़े के अभिवादन के लिए "प्रणाम" और छोटे के लिए "आशीर्वाद" लिखा जाता है। बराबरी वाले ब्राह्मण एक दूसरे को "नमस्कार" लिखते हैं, पर अब यह शब्द अन्य जातियों में भी प्रचलित हो गया है। ब्राह्मण लोग दूसरी जाति वालों को बहुधा आशीर्वाद लिखते हैं।

(३) अभिवादन में पत्र लिखने वाले तथा पाने वाले के स्थान का उल्लेख रहता है।

(४) अभिवादन के पश्चात् कुशल कामना लिखी जाती है। फिर मुख्य समाचार का आरम्भ होता है।

(५) अन्त में स्वास्थ्य, ऋतु आदि का संक्षिप्त वर्णन करके पत्र समाप्त किया जाता है। पत्र के अन्त में लेखक के स्थान का नाम, पत्र की तिथि और लेखक के हस्ताक्षर रहते हैं।

(६) पुरानी शैली के पते का प्रचार धीरे-धीरे कम हो रहा है। उसके स्थान में नई शैली का पता अधिकता से काम में लाया जाता है। पुरानी शैली का पता पढ़ने में स्पष्ट नहीं रहता। ७४॥ का अर्थ ऐतिहासिक है।

(७) पत्र किसी भी प्रणाली का हो उसमें बहुधा पाँच खण्ड होते हैं (१) स्थान और तिथि (२) संबोधन और अभिवादन (३) कुशल-कामना और पत्रारम्भ (४) मुख्य समाचार और लेखक का नाम और (५) पाने वाले का पता।

लड़कों से नीचे लिखे विषयों पर पते समेत पुरानी शैली के पत्र लिखाये जावें—

(१) बड़े भाई को परीक्षा फल के विषय में।
(२) पिता को छोटे भाई की बीमारी के विषय में।
(३) माता को छुट्टी के कार्य के विषय में।
(४) बहिन की ओर से छोटे भाई को अपने घर बुलाने के विषय में।
(५) गुरु को कविता का अर्थ पूछने के विषय में।
(६) बड़ी बहिन को कुम्भ के मेले के विषय में।
(७) मित्र को धन्धा चुनने के विषय में।

नई शैली के पत्र

(क) उदाहरण

(कौटुम्बिक और सामाजिक)

(१) पुत्र की ओर से माता को

(स्वास्थ्य के विषय में)

रानी कटरा,
लखनऊ
२ अप्रैल १९३०

परम पूज्य माता जी,

सादर प्रणाम। आपका कृपापत्र मिला। प्रसन्नता हुई। मेरा स्वास्थ्य पहले से अब बहुत अच्छा है, तो भी मैं पथ्य से रहता हूँ। आपके जानने के लिए मैं इस पत्र में अपनी दिनचर्या लिखकर भेजता हूँ। मेरा भोजन साधारण है और घी के बदले में दूध का अधिक सेवन करता हूँ। रात को मैं समय पर सो जाता हूँ और सवेरे छः बजे उठता हूँ। रात को मैं मन में उद्वेग करने वाली पुस्तकें नहीं पढ़ता और न मित्रों के साथ ऐसी बातचीत करता हूँ। मन को सदा शान्त और स्वस्थ रखता हूँ। साँझ-सवेरे मैं घूमने जाता हूँ और प्रति दिन थोड़ा बहुत व्यायाम भी करता हूँ। आप मेरे स्वास्थ्य के विषय में कोई चिन्ता न करें क्योंकि मुझे अपने शरीर का बहुत ध्यान रहता है। मैं यह अच्छी तरह समझता हूँ कि "सरुज शरीर बाद बहु भोगा"। आपके उपदेश-पूर्ण पत्र से इस विषय में मेरा ज्ञान और भी बढ़ गया है और अब मैं यह समझने लगा हूँ कि शरीर ईश्वर की थाती है। कुपथ्य, कुविचार और अनाचार से इसे नष्ट करना मानो ईश्वर-द्रोह करना है। अधिक क्या लिखूँ। पिता को प्रणाम और भाइयों को प्यार तथा आशीर्वाद।

आपका आज्ञाकारी
रामेश्वर

पता

[नई शैली के अनुसार]

श्रीमती सुभद्रा देवी
ठिकाना—पं० विश्वेश्वरदयाल पाठक
पोस्ट मास्टर
सीतापुर
(उ० प्र०)

(२) बड़ी बहिन की ओर से छोटे भाई को

(तमाखू खाने-पीने के विषय में)

गोरा बाजार, नैनीताल

परम प्रिय दयाशंकर, २ अप्रैल, १९३०

आशीर्वाद। तुम्हारा पत्र मिला। हम सब यहाँ अच्छी तरह हैं। ईश्वर तुम लोगों को वहाँ कुशल पूर्वक रक्खे। इस पत्र में मैं तुमको तमाखू के उपयोग की बुराइयों के विषय में कुछ बताना चाहती हूँ। वयस्क युवक बहुधा कुसंगति में पड़कर तमाखू पीना व खाना अथवा दोनों दुर्गुण सीख लेते हैं। कभी-कभी घर के बड़े लोगों को इसका उपयोग करते देख छोटे लड़के छिपकर उनका अनुकरण करते हैं। यद्यपि कभी-कभी बड़ी आयु वालों को डाक्टर या वैद्य की सम्मति के अनुसार तमाखू खाने, पीने अथवा (नास) सूँघने से लाभ होता है, तथापि छोटी उमर वालों और विशेषकर विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार का नशा हानिकारक है। तमाखू खाने या पीने से उनकी बाढ़ कम हो जाती है और उन्हें खाँसी, दमा आदि रोग घेर लेते हैं। इससे उनकी पाचन-शक्ति नष्ट हो जाती है। इससे समय और धन का भी नाश होता है। सबसे बड़ी हानि यह है कि तमाखू के उपयोग से मस्तिष्क बिगड़ जाता है। इस प्रकार इस नशे से अनेक हानियाँ हैं।

स्वास्थ्य-रक्षा की पुस्तकों में ये सब दोष विस्तार-पूर्वक लिखे गये हैं। तुम चाहो तो इन्हें पढ़कर जान सकते हो। तमाखू का नशा करने वाले बहुधा छोटे लड़कों को फुसलाकर इसे सिखाते हैं, इसलिए तुम कभी उनकी बातों में मत आना।

दूसरे पत्र में मैं तुम्हें शरीर रक्षा के विषय में कुछ बातें बताऊँगी। मेरी इच्छा है कि तुम गर्मी की छुट्टी में मेरे पास रहो। शेष कुशल है। पत्र का उत्तर देना।

तुम्हारी हितैषिणी
व्रजकुमारी

पता

श्रीयुक्त दयाशङ्कर त्रिवेदी चतुर्थ वर्ग कृष्णानन्दन महाविद्यालय कुंडलपुर (विदर्भ)	टिकट

(३) छोटे भाई की ओर से बड़े भाई को

(पत्रोत्तर में विलंब के विषय में)

अनारकली
लाहौर
३ अप्रैल, १९३०

प्रियवर बड़े भैया,

सादर प्रणाम। बहुत दिनों से मैं आपको पत्र न लिख सका, इसके लिये मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ। मैं लगभग दो सप्ताह तक बीमार रहा और फिर प्रायः तीन सप्ताह तक मैं परीक्षा के लिए तैयारी करता रहा। इसके पश्चात् १५ दिन तक मैं परीक्षा में लगा रहा। इन सब कारणों से मैं आपको पत्र न लिख सका। मैं

जानता हूँ कि मेरा पत्र न पहुँचने से आपको बहुत चिन्ता हुई है। आपके पत्रों से आपकी चिन्ता प्रकट होती है। अब आगे मुझसे ऐसी भूल न होगी। मेरे आलस से भी पत्र लिखने में विलंब हुआ। अब मेरी परीक्षा समाप्त हो गई और मैं दो-चार दिन में घर आता हूँ। मैंने प्रश्नों के उत्तर साधारणतया अच्छे लिखे हैं। कृपया ७ ता० (सोमवार) को रात के ६ बजे किसी को स्टेशन पर भेज दीजिएगा। मेरे पास सामान कुछ अधिक है। शेष कुशल है। आशा है आप मेरे अपराधों को क्षमा करेंगे। बच्चों को प्यार।

आपका सेवक
शिवदत्त

पता

श्रीयुत बाबू हरिदत्त
कलेक्टर का दफ्तर
मैनपुरी
(उ० प्र०)

टिकट

(४) मित्र को

(कविता की पुस्तक चुनने के विषय में)

चाँद पोल दरवाजा,
जयपुर
४ अप्रैल, १६३३

प्रियवर तिवारी जी,

नमस्कार। आपका पत्र मिला। कृपा के लिये धन्यवाद। अत्र कुशलं तत्रास्तु। आपने मुझसे खड़ी बोली की एक उत्तम काव्य पुस्तक का नाम पूछा है। मेरी समझ में बाबू मैथिलीशरण गुप्त

की "जयद्रथ वध" नामक पुस्तक बहुत उत्तम है। इसमें वीर, करुण और शान्त रस का अपूर्व सम्मिलन है। साथ ही इसमें प्रकृति का वर्णन और चित्रण भी उत्तमता से किया गया है। इसके सिवा इस पुस्तक में उपयुक्त अलंकारों का भी समावेश किया गया है। गुप्त जी की भाषा शुद्ध, सरल और स्पष्ट रहती है। "जयद्रथ वध" पाठशालाओं की उच्च कक्षाओं में पाठ्य पुस्तक भी नियत की गई है। इस पुस्तक के पढ़ने से हमें अपने पूर्वजों की वीरता और आदर्श आचरण की शिक्षा मिलती है और उच्च भाषा का ज्ञान होता है।

कृपया लिखिये की आजकल आप किस काम में लगे हैं। मैं "विशारद" परीक्षा की तैयारी कर रहा हूँ इसलिए दूकान के काम-काज में पिता जी को अधिक सहायता नहीं दे सकता। शेष कुशल है। अधिक क्या लिखूँ।

आपका स्नेही
रामप्रताप पांडे

पता

श्रीयुत पं० दुर्गाप्रसाद तिवारी मालगुजार डा० घ० सिरसा जि० इलाहाबाद (उ० प्र०)	टिकट

———

(५) पुत्र की ओर से पिता को

(चाल-चलन के लिये क्षमा के विषय में)

फूटाताल
जबलपुर
५ अप्रैल, १९३०

पूज्य पिता जी,

सादर प्रणाम। आपका कृपा-पत्र मिला। ईश्वर की कृपा से मैं यहाँ अच्छी तरह से हूँ और भगवान से आपकी कुशल मनाता हूँ। मेरे आचरण के विषय में आपने जो कुछ लिखा है वह सब ठीक है। आपके उपदेश पूर्ण पत्र से मुझे भली-भाँति प्रकट हो गया कि आचरण ही मनुष्य के जीवन की कसौटी है। अब मैं आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि आप कृपया मेरे अपराधों को क्षमा कर दीजिये। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मुझे अपने दोषों के लिये बड़ा पश्चात्ताप हो रहा है और अब मैं आगे आपकी आज्ञा का पालन करूँगा। आपकी अवज्ञा करने का फल मुझे ईश्वर ने दे दिया है। मेरे शिक्षक मुझसे कहते हैं कि इस समय तुम्हारे मुख पर वह तेज नहीं है जो पहले था; तुम्हारा चेहरा पीला पड़ गया है और आँखें भीतर घुस गई हैं। शरीर कृश और काला हो रहा है। इन सब बातों से मुझे बड़ा दुःख है। अपने पत्र में मैंने, कुमति में पड़कर, आपको जो अशिष्ट बातें लिख दी थीं उनके कारण भी मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा है। पिता जी, मेरे अपराधों को क्षमा कीजिये और मुझ पर पहले के समान दया रखिए जिससे मैं आगे सुधर जाऊँ। आशा है, आप मेरे नम्र निवेदन पर ध्यान देंगे। माता को प्रणाम तथा भाइयों को प्यार और आशीर्वाद।

आपका चरण-सेवक
विश्वनाथ सिंह

पता

श्रीमान् ठाकुर अर्जुनसिंह मालगुजार धनतोली नागपुर (म० प्र०)	टिकट

(६) बड़े भाई की ओर से छोटे भाई को
(शिष्टाचार-सम्बन्धी उपदेश)

देवताल,
सहारनपुर
७ अप्रैल, १९३०

प्रिय महेश,

आशीर्वाद। मैं यहाँ अच्छी तरह हूँ, और आशा है कि तुम सब वहाँ कुशलपूर्वक होगे। तुमको यह जानकर बड़ा दुःख होगा कि माता को तुम्हारे अनुचित व्यवहार से बड़ा दुःख है। वे लिखती हैं कि कुछ दिनों से तुमने अपना स्वभाव बिगाड़ लिया है। यदि यह सत्य है—और माता की बात असत्य नहीं हो सकती तो तुम्हें अपने स्वभाव को सुधारना चाहिये। तुम्हारे लिये यह उचित नहीं है कि तुम बात-बात पर चिड़चिड़ाओ और जो तुम्हारे हित की बात कहे उससे असभ्यता पूर्वक बातचीत करो। मनुष्य की बातचीत से ही उसकी सभ्यता या असभ्यता प्रकट होती है। इसी प्रकार घर के जेठों की आज्ञा मानना नम्रता का बड़ा चिन्ह है। यदि तुम घर ही में सभ्यता का व्यवहार नहीं कर सकते तो बाहर क्या करोगे? जब तुम स्वयं जेठों का निरादर करते हो तब तुम इस बात की कैसे आशा कर सकते हो कि तुम से छोटे भाई तुम्हारा आदर करेंगे। व्यवहार की सबसे अच्छी नीति यही है कि मनुष्य दूसरों से वैसा ही बर्ताव करे

जैसा वह उनसे अपने साथ चाहता है। मैं समझता हूँ कि तुम मेरी बातों पर ध्यान देकर विचार करोगे। शेष कुशल है।

तुम्हारा भाई
सुरेशप्रसाद

पता

महेश प्रसाद गौतम गोलागंज लखनऊ (उ० प्र०)	टिकट

(७) शिष्य की ओर से गुरु को

(एक स्थान का वर्णन)

जीवनगंज
जबलपुर
८—४—३०

परम पूज्य गुरु जी,

सादर प्रणाम। मैं यहाँ कुशल-पूर्वक हूँ और ईश्वर से आपकी क्षेम-कुशल चाहता हूँ। आपका कृपा-पत्र मिला। आनन्द प्राप्त हुआ। मैं आपकी आज्ञानुसार दुर्गावती की समाधि देखने गया था। उसका कुछ वर्णन आपको लिखकर भेजता हूँ।

जबलपुर-मँडला सड़क पर जबलपुर से लगभग पाँच मील की दूरी पर गौर नदी का रपटा है। उसके दूसरे किनारे से दक्षिण की ओर एक कच्चा रास्ता जाता है जिसके किनारे लगभग पाँच मील की दूरी पर नरई नाम का एक गाँव है। इस गाँव के आस-पास घना जंगल और ऊँचे-नीचे टीले हैं। थोड़ी दूर पर नरई

नामक एक पहाड़ी नाला है जिसके कारण उस गाँव का नाम नरई पड़ा है। इसी नाले के किनारे रानी दुर्गावती की समाधि बनी है जिसे साधारण लोग दुर्गावती का चबूतरा कहते हैं। यहाँ का रास्ता बहुत ही बीहड़ है। चबूतरे के बीच में एक पेड़ लगा है और एक ओर किनारे पर एक लेख खुदा है। इस समय चबूतरा टूटी-फूटी दशा में है। खेद है कि कोई देश-हितैषी इसका जीर्णोद्धार कराने के प्रयत्न का विचार तक नहीं करता।

समाधि के लेख में उस युद्ध का वर्णन है जो दुर्गावती और अकबर के सूबेदार आसफ खाँ के बीच में हुआ था। इस समय लेख के अक्षर बहुत अस्पष्ट हो गये हैं। समाधि के पास से आने-जाने वाले पास ही पड़े हुये छोटे-छोटे सफेद पत्थर उस पर आदर की दृष्टि से चढ़ा देते हैं।

मैं समझता हूँ कि यदि जबलपुर की जनता अथवा जिला सभा यहाँ वार्षिक मेला करने का प्रबन्ध करे तो आस-पास के निवासियों को अनेक लाभ हों।

आपका आज्ञाकारी
मनोहरलाल गुप्त

पता

श्रीमान् पं० रामदत्त त्रिपाठी, काव्यतीर्थ
प्रधान अध्यापक
संस्कृत पाठशाला
टेहरी
(उ० प्र०)

टिकट

मनोहरलाल गुप्त
जीवनगंज
जबलपुर

(८) प्रबन्धक के नाम
(पुस्तक लेने के विषय में)

साहित्य-भवन
दारागंज
प्रयाग
६—४—३०

प्रिय महाशय,

निवेदन है कि लगभग दो सप्ताह पूर्व मैंने आपके यहाँ से "सदाचार-दर्पण" की पाँच प्रतियाँ मँगाई थीं, पर आपने आज तक पुस्तकें न भेजीं। आपने मेरे पत्र का कोई उत्तर भी नहीं दिया; इसलिये प्रार्थना है कि कृपया पुस्तकें अथवा पत्र का उत्तर शीघ्र भेजिये। मैं एक सप्ताह तक आपके उत्तर की प्रतीक्षा करूँगा। इसके बाद मैं किसी दूसरे स्थान से पुस्तकें मँगाऊँगा।

यदि आपकी पुस्तकें निश्चित अवधि के पश्चात् आवेंगी तो मैं उन्हें स्वीकृत न करूँगा।

भवदीय
राधाकृष्ण
मंत्री

टिकट

श्रीयुत प्रबन्धक जी
मिश्र-बन्धु कार्यालय
जबलपुर
(म० प्र०)

(९) महाजन के नाम

(ऋण लेने के विषय में)

३०, बसंतल्ला
कलकत्ता
१२—४—३०

प्रिय महाशय,

कुछ दिन पहले मैंने आपसे निवेदन किया था कि यदि आप मुझे ५००) पाँच सौ रुपये एक वर्ष के लिये ऋण देंगे तो बड़ी कृपा होगी। इस समय मुझे रुपये की बड़ी आवश्यकता है क्योंकि मुझे दूकान के लिये नया माल मँगाना है। इस लिये फिर आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप इस समय मेरी सहायता कर दीजिये। मैं आपको नियत व्याज दूँगा और अवधि के भीतर आपके रुपये पटा दूँगा। आप जिस दिन के लिये लिखेंगे उस दिन मैं आपके पास आकर ऋण-पत्र लिख दूँगा। आशा है आप मेरी प्रार्थना पर ध्यान देंगे। कार्य बहुत आवश्यक है; इसलिये मैं आपको कष्ट देता हूँ। कृपया कष्ट क्षमा कर मेरी सहायता कर दीजिये। इति

आपका कृपाकांक्षी
रामदास गुप्त

पता

सेठ प्रतापचन्द्र व्यास मारवाड़ी टोला पटना (बिहार)	टिकट

(१०) मकान मालिक के नाम

(मक़ान की मरम्मत के विषय में)

कृष्णकुटीर
अलमोड़ा
११—४—३०

प्रिय महाशय,

आप जानते हैं कि मैं लगभग तीन वर्ष से आपके मकान में किराये से रहता हूँ और हर महीने ठीक समय पर किराया पटा देता हूँ। तो भी आप इस मकान की जरूरी मरम्मत भी नहीं कराते। आँगन की नाली फूटकर पुर गई है और नल का पाया गिर रहा है। इसके सिवा बरसात में मकान इतना टपकता है कि कहीं सामान रखने की जगह नहीं मिलती। आपसे कई बार इन बातों की शिकायत की गई; पर आपने उस पर आज तक ध्यान नहीं दिया। आप मकान देखने को एक बार भी नहीं आये। खेद है कि आप मेरी कठिनाई का कुछ भी विचार नहीं करते। अब मैं आप को अन्तिम बार सूचना देता हूँ कि आगे जब तक आप मकान की मरम्मत न करवावेंगे; तब तक मैं आपको मकान का किराया न दूँगा। आप अगर चाहें तो मैं खुद मरम्मत करा लूँगा और खर्चे का रुपया किराये से काट लूँगा। चिट्ठी का उत्तर भेजिए जिससें मेरा नुकसान न हो।

आपका शुभचिंतक
रुद्रप्रसाद चौबे

पता

बाबू शिवदयाल सिंह श्रीवास्तव मालगुजार सदरबाजार बिजनौर (उ० प्र०)	टिकट

(प्रार्थना-पत्र)

(११) प्रधान अध्यापक के नाम
(छुट्टी के लिए प्रार्थना)

श्रीमान् प्रधान अध्यापक
संस्कृत पाठशाला
मंसूरी

महोदय,

नम्र निवेदन है कि मेरे पिता कई दिनों से अस्वस्थ हैं और आज उनकी अवस्था बहुत ही निर्बल हो गई है। ऐसी दशा में उनके पास रहना मेरे लिये बहुत आवश्यक है। अतएव प्रार्थना है कि आप कृपा कर मुझे दो सप्ताह की छुट्टी देवें जिससे मैं उनकी पूरी सेवा कर सकूं। आपको इस कृपा के लिये मैं सदैव आपका कृतज्ञ रहूँगा।

आशा है आप मेरी प्रार्थना पर ध्यान देंगे।

रामघाट
काशीपुर
१२—४—३०

आपका आज्ञाकारी सेवक
ज्ञानेश्वर प्रसाद पांडे
विद्यार्थी

पता

टिकट

श्रीमान् प्रधान अध्यापक
संस्कृत पाठशाला
मसूरी
(उ० प्र०)

(ख) नई शैली के पत्र लिखने की रीति

१—नई शैली के पत्र बहुधा अँगरेजी रीति पर लिखे जाते हैं।

आजकल इस रीति के पत्रों और पतों का प्रचार अधिक है।

२—नई शैली के पत्रों में ऊपर दाईं ओर स्थान और तिथि लिखी जाती है और कुछ नीचे बाईं ओर संबोधन शब्द लिखते हैं।

३—संबोधन के साथ अथवा उससे कुछ हटकर दूसरी पंक्ति मे अभिवादन के शब्द प्रणाम, नमस्कार, आशीर्वाद इत्यादि लिखे जाते हैं।

४—अभिवादन के पश्चात् कुशल कामना और उसके बाद मुख्य समाचार लिखा जाता है।

५—अन्त में स्वास्थ्य, ऋतु आदि का संक्षिप्त वर्णन करके पत्र समाप्त किया जाता है।

६—समाप्ति से कुछ नीचे दाहिनी ओर पत्र पाने वाले से सम्बन्ध सूचित करने वाले शब्दों के साथ लिखने वाले का नाम रहता है। मुख्य सम्बन्ध सूचक शब्द प्रेमी, स्नेही, सेवक, आज्ञाकारी, विश्वासी इत्यादि हैं।

७—पत्र के पश्चात् पाने वाले का पता लिखा जाता है जिसमें उसका नाम, पद इत्यादि लिखते हैं।

८—काम-काजी तथा सरकारी पत्रों में अभिवादन नहीं लिखा जाता और न ऐसी बातें लिखी जाती हैं जिनसे घरोवा सूचित होता है।

९—प्रार्थनापत्रों में संबोधन शब्द, पत्र के ऊपरी भाग में और स्थान तथा तिथि नीचे हस्ताक्षर की बाईं ओर लिखे जाते हैं।

१०—पत्रों की भाषा सहज और शुद्ध हो। विचार स्पष्ट तथा संबद्ध रहें। पत्र में ऐसी बात न लिखी जावे जिससे पढ़ने वाले को बुरा लगे।

अभ्यास (५—२)

विद्यार्थी नीचे लिखे विषयों पर नई शैली के पत्र और प्रार्थना-पत्र पते समेत लिखें—

(१) माता को अपने स्वास्थ्य के विषय में।
(२) पिता को अपनी यात्रा के विषय में।
(३) छोटी बहिन को भेजने के विषय में।
(४) बड़ी बहिन को पढ़ाई के विषय में।
(५) गुरु को नई पाठशाला के विषय में।
(६) कार्यालय के प्रबंधक को नौकरी के विषय में प्रार्थनापत्र।
(७) किसान को खेत का लगान पटाने के विषय में।
(८) किरायेदार को मकान का किराया चुकाने के विषय में।
(९) बड़े भाई को अपने मासिक व्यय के विषय में।
(१०) मित्र को पुस्तक देने के विषय में।
(११) नगर-सभा के सभापति को सड़क की स्वच्छता के विषय में प्रार्थना-पत्र।

छठा परिच्छेद

विचारात्मक निबन्ध

(क) उदाहरण

(१) मित्रता

संसार में प्रायः सभी मनुष्य अपने साथियों से मेल बढ़ाने की इच्छा रखते हैं। अनजान लोगों से भी जान-पहिचान करना चाहते हैं। पशु पक्षी और दूसरे प्राणी भी बहुधा झुंड में रहते हैं। मनुष्य दूसरे जीवधारियों से बुद्धि में श्रेष्ठ है; इसलिये वह पहचान वालों से मेल-मिलाप और मेल वालों से मित्रता बढ़ाने की इच्छा करता है। दूसरे प्राणियों में भी मित्रता का थोड़ा बहुत भाव पाया जाता है।

मित्रता से प्रेम बढ़ता है और मनुष्य में प्रेम एक बड़ा गुण है। हम गुणवान मनुष्यों की मित्रता से अपने दोष दूर करके नये गुण सीखते हैं। सच्चे मित्र हमें समय पर सहायता देते हैं

और संकट के समय धीरज दिलाते हैं। कहा है—

पाप निवारत, दुःख हरत, गुन गनि, औगुन ढाँकि।
दुःख में राखत, देत कछु, सन्मित्रन ये आँकि॥

मित्रता से मन में आनन्द बना रहता है और मित्र के मिलने से सुख होता है। मित्रता के कारण हमारे मन की संकीर्णता दूर हो जाती है और उसमें उपकार के भाव आ जाते हैं।

मित्र चुनने में बड़ी सावधानी की आवश्यकता है। जो लोग सदाचारी हैं उन्हीं की मित्रता से हमें लाभ हो सकता है। कपटी मित्र हमें धोखा देकर विपत्ति में डालते हैं। अनेक प्रकार के सचाई की परीक्षा कर लेने पर ही किसी को अपना मित्र मानना चाहिये। ऐसे मनुष्य से मित्रता न की जावे जो बाहर से भलाई के मीठे वचन कहता है और भीतर से बुराई करता है। क्रोधी और अभिमानी मनुष्य की मित्रता बहुत दिन नहीं चल सकती। जिन मनुष्यों के स्वभावों में समानता होती है उन्हीं में मित्रता निभ सकती है। मित्रता के लिये समान अवस्था और वय की भी बहुत आवश्यकता है।

मित्र के साथ सदैव सच्चाई का बर्ताव करना आवश्यक है। हमें उसका विश्वास करना चाहिए और उसके आगे अपने हृदय का भेद प्रकट करने में संकोच न करना चाहिए। मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह अपने मित्र के दुःख मे दुखी और सुख में सुखी होवे। तुलसीदास जी ने कहा है—

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी।
तिनहिं बिलोकत पातक भारी॥

यदि मित्र किसी दुर्गुण में पड़ने वाला हो तो हमें उसे उस दोष से बचाने का प्रयत्न करना चाहिये। विपत्ति के समय मित्र की सहायता करना भी हमारा परम कर्त्तव्य है।

सारांश यह है कि मनुष्य को दो चार मित्र अवश्य बनाना चाहिये और उनकी मित्रता को बनाये रखना चाहिए। मित्रता से हमें सुख मिलता है और हमारे हृदय को सन्तोष प्राप्त होता है।

(२) प्रवास (यात्रा)

मनुष्य के मन में नये-नये देश और स्थान देखने की इच्छा स्वभाव ही से होती है। बहुधा काम-काज से भी लोगों के एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने की आवश्यकता होती है। इसलिए मनुष्य के जीवन में प्रवास या यात्रा करना एक महत्व की घटना है।

पुराने समय में लोग बहुधा व्यापार अथवा तीर्थ-दर्शन के लिये यात्रा करते थे। अपने मित्रों और सम्बन्धियों से मिलने के लिए भी उस समय प्रवास किया जाता था पर आज-कल के जीवन में यात्रा करना बहुत आवश्यक हो गया है। इन दिनों ऐसे लोग बहुत कम मिलेंगे जो अपना गाँव या नगर छोड़कर दूसरी जगह न गये हों। यात्रा के अनेक सहज सस्ते साधनों के कारण भी आजकल लोग अधिक यात्रा करते हैं।

प्राचीन काल में बैल-गाड़ी और रथ पर बैठ कर यात्रा की जाती थी। उस समय हाथी, घोड़े और ऊँट भी सवारी के काम में लाये जाते थे। जल की यात्रा के लिये नावों और डोंगियों का उपयोग होता था, तो भी इन सब साधनों से थोड़ी ही दूरी की यात्रा की जाती थी। पर आजकल अनेक प्रकार की नई और विचित्र सवारियाँ निकाली गई हैं और उनमें दूर-दूर के स्थानों में प्रवास किया जाता है। प्राचीन वाहनों की गति बहुत धीमी होती थी और मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ आती थीं। परन्तु आजकल घंटे में सौ मील भी जाना सहज है और रास्ते में विश्राम अथवा भोजन की विशेष कठिनाई नहीं होती। इन दिनों केवल जल और थल में ही सरलतापूर्वक यात्रा नहीं की जाती, वरन् आकाश में भी हवाई जहाज द्वारा प्रवास किया जाता है। भाप और बिजली की सहायता से यात्रा की गति इतनी शीघ्र हो गई है कि "दिल्ली शहर में करै कलेऊ औ कनवज में अचवें जाय।" आज-कल की तेज सवारियों में साइकिल, मोटर, ट्राम, रेल और हवाई जहाज मुख्य हैं।

यात्रा करने से अनेक लाभ होते हैं। दूसरे स्थान में जाने से हमें नये-नये दृश्य, भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग और नये-नये पहिनावे देखने को मिलते हैं। वहाँ अलग-अलग प्रकार की भाषायें भी सुनने में आती हैं। परदेश में हमें भिन्न-भिन्न रीति रिवाजों का भी ज्ञान होता है। यात्रा करके हम व्यापार भी कर सकते हैं और जो वस्तु हमारे देश में नहीं होती उन्हें तैयार अथवा उत्पन्न करना सीख सकते हैं। प्रवास से स्वास्थ्य को भी लाभ होता है। बहुधा रोगी लोगों को दूसरे उपयुक्त स्थानों में जाने से आराम मिलता है और उनका रोग दूर हो जाता है। प्रवास से मनुष्य को सावधान, साहसी और परिश्रमी बनने का अनुभव प्राप्त होता है।

प्रवास से कुछ हानियाँ भी होती हैं। इसमे मनुष्य का व्यर्थ खर्च पड़ता है और कभी-कभी खाने-पीने का कष्ट होता है। कोई कोई लोग प्रवास में बीमार पड़ जाते हैं और साथ में कोई सहायक न होने से दुःख पाते हैं। तो भी ये सब हानियाँ लाभों के सामने बहुत थोड़ी हैं और इनसे प्रवास के लाभ कम नहीं होते हैं। यथार्थ में यात्रा एक बड़ी पाठशाला के समान है, जिसमें मनुष्य अनेक प्रकार की विद्या सीखता है। पढ़ने-लिखने के पश्चात् प्रवास करने से विद्या की वृद्धि होती है।

(३) समाचार-पत्र

समाचार-पत्र वे कहलाते हैं जो नियत समय पर छापे जाते हैं और जिनमें समाचार तथा उपयोगी लेख और विचार रहते हैं। समाचार पत्र दैनिक, कई एक अर्द्ध साप्ताहिक और कई एक साप्ताहिक होते हैं।

सामाचार-पत्र हजारों की संख्या में छापे जाते हैं और चंदा देने वालों के पास भेजे जाते हैं। उनमें नये-नये समाचार और शिक्षा देने वाले लेख रहते हैं। व्यापारी लोग समाचार-पत्रों में विज्ञापन छपाते हैं जिन्हें पढ़कर लोग उनका माल मँगाते हैं।

यदि किसी जगह किसी समय सभा होने वाली हो तो उसकी सूचना बहुधा समाचार-पत्रों में छाप दी जाती है जिसे पढ़कर लोग सभा में उपस्थित होते हैं। समाचार-पत्रों में लेख व विचार प्रकाशित किये जाते हैं। उन्हें पढ़कर पाठक अनेक विषयों की शिक्षा प्राप्त करते हैं। इन पत्रों से समय-समय पर छापी हुई नई-नई पुस्तकों का भी पता मिलता है। युद्ध के समय समाचार-पत्र के ही द्वारा समाचार मिल सकते हैं।

समाचार पत्रों में समाचार, लेख और विचार प्रकाशित करने वाला कर्मचारी संपादक कहलाता है। संपादक लोग समाचार-पत्रों के द्वारा जाति, समाज और देश का बड़ा उपकार करते हैं। वे लोग शासकों और दूसरे लोगों के अत्याचारों की निन्दा करते हैं और समाज की कुरीतियों का सुधार कराते हैं। यदि प्रजा कोई अनुचित कार्य करती है तो वे उसकी भी निन्दा करके उसे बन्द करने का प्रयत्न करते हैं। प्रजा की पुकार राजा के पास पहुँचाना समाचार-पत्रों का मुख्य काम है। यदि कोई मनुष्य चाहे तो वह अपने उपयोगी विचारों का प्रचार समाचार पत्रों के द्वारा कर सकता है।

समाचार-पत्र पढ़ने से लोगों को बहुत लाभ होते हैं। वे घर बैठे हुए संसार भर के समाचार जान सकते हैं। किस देश में राजा-प्रजा का क्या संबंध है यह बात उन्हें समाचार-पत्रों ही से ज्ञात होती है। व्यापारी लोग अन्य देशों का बाजार भाव जानकर वहाँ से माल मँगाने अथवा वहाँ भेजने का प्रबंध करते हैं। यात्री लोग किसी स्थान की बीमारी आदि जानकर वहाँ जाने या न जाने का निश्चय करते हैं। विद्यार्थी लोग समाचार-पत्रों के लेखादि पढ़कर पाठशाला में पढ़ी हुई अपनी विद्या को और भी पुष्ट कर सकते हैं। साधारण लोग समाचार-पत्रों के द्वारा नया-नया ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

जो देश जितना अधिक शिक्षित और उन्नत होता है उसमें उतने ही अधिक और अच्छे समाचार-पत्र निकाले जाते हैं।

जिस देश में समाचार-पत्र नहीं हैं वहाँ के लोगों की दशा कूप-मंडूक के समान है। यथार्थ में समाचार पत्र से किसी देश की सभ्यता का पता लगता है।

समाचार-पत्रों से कभी-कभी हानि भी होती है। कई एक संपादक झूठे समाचार छापकर लोगों को भड़का देते अथवा भिन्न-भिन्न जातियों में झगड़ा करा देते हैं। कभी-कभी समाचार-पत्रों में राज-द्रोही लेख छापे जाते हैं जिनसे राजा और प्रजा में द्वेष उत्पन्न हो जाता है। इतना होने पर भी समाचार-पत्र देश की उन्नति का एक प्रधान साधन है।

(४) सत्यता

किसी भी देखी या सुनी हुई बात को बिना घटाये-बढ़ाये कह देना सत्यता है। कोई लड़का रास्ते में गिर पड़ा और उसे चोट लग गई। घर में पिता को उसने चोट लगने का कारण गिरना न बताकर और कुछ बताया, तो वह झूठ बोला।

यथार्थ में सत्यता मनुष्य का एक बड़ा आवश्यक गुण है। प्रत्येक मनुष्य यह चाहता है कि उसे प्रत्येक बात का सच्चा-सच्चा हाल मालूम हो। यही कारण है कि सच बोलने वाले मनुष्य का समाज मे खूब आदर होता है। जहाँ तक हो सके मनुष्य को सच बोलना चाहिए। यहाँ तक कि यदि सच बोलने में प्राणों का भी संकट हो, तो भी सत्य से पीछे नहीं हटना चाहिए। सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र ने सत्य के पीछे कितने दुःख सहे, पर सत्य न छोड़ा।

सत्य बोलने वाले मनुष्य का सब जगह आदर होता है और लोग उसकी बातों का विश्वास करते हैं। जो मनुष्य सच नहीं बोलता वह समाज में घृणा की दृष्टि से देखा जाता है और उसकी बात का कोई विश्वास नहीं करता।

सच न बोलने से अनेक भयंकर दुर्घटनायें हो जाती हैं। कभी-कभी तो सच बात न मालूम होने के कारण बड़े-बड़े भयंकर युद्ध हो जाते हैं। सच बात न कहने से जनता में झूठी खबरें उड़

जाती हैं और लोगों में भ्रम फैल जाता है। सत्य न बोलने वाला मनुष्य कई पाप कर सकता है, क्योंकि अपना झूठ छिपाने के लिए वह सदा प्रयत्नशील रहेगा। कभी-कभी तो एक झूठ छिपाने के लिए मनुष्य को कई झूठी बातें बोलनी पड़ती हैं, इसलिए मनुष्य को अपने और दूसरों के सुभीते के लिए जहाँ तक हो सके सच बोलना चाहिए।

कभी कभी ऐसा अवसर आ जाता है, जब सत्य बोलने से काम नहीं चलता और सत्य न बोलने से किसी का उपकार होता है। ऐसे अवसर पर मनुष्य को क्या करना चाहिए? मान लो, सत्य न बोलने से किसी निरपराधी के प्राण बच सकते हैं, तो उस समय परोपकार की दृष्टि से झूठ बोलने में कोई हानि नहीं है, पर इसका अर्थ यह नहीं है कि परोपकार के बहाने सदा असत्य बोला जावे। मनुष्य के जीवन में ऐसे अवसर बहुत कम आते हैं।

सारांश यह है कि सत्य बोलना मनुष्य के तथा समाज के हित के लिए आवश्यक है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को सत्य बोलने की भरसक कोशिश करनी चाहिए। कहा भी है—

साँच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप।
जाके हिरदे साँच है, ताके हिरदे आप॥

(५) जन्म-भूमि

मनुष्य को जिस प्रकार अपनी भाषा, भोजन और देश प्यारा लगता है, उसी प्रकार उसे अपनी जन्म-भूमि के लिए भी प्रेम होता है। अपने निवास-स्थान का प्रेम पशु-पक्षियों में पाया जाता है।

जन्म-भूमि शब्द का अर्थ केवल जन्म का थोड़ा सा स्थान अथवा कोठा नहीं है। इस शब्द से अपने घर, मुहल्ले, गाँव और नगर का भी अर्थ लिया जाता है। इतना ही नहीं, किन्तु जन्म-भूमि में अपना प्रदेश और फिर सम्पूर्ण देश भी मिला हुआ है। जन्म-भूमि को हम लोग बहुधा मातृ-भूमि कहते हैं। हम सब की मातृ-भूमि भारत है।

मनुष्य स्वभाव ही से अपनी जन्मभूमि को प्यार करता है। परदेश में रहने वाले लोगों के मन में सदा अपनी जन्मभूमि का ध्यान रहता है। वे वहाँ के समाचार जानने के लिये सदैव उत्सुक रहते हैं। जब वे लोग अपने देश लौटते हैं तब उन्हें वहाँ के मनुष्यों, पदार्थों और स्थानों को देखने से बड़ा ही आनन्द होता है। रामचन्द्र जी ने वनवास से अयोध्या को लौटते समय अपने सेवकों से कहा था कि—

जन्म-भूमि मम पुरी सुहावनि।
उत्तर दिशि सरजू बह पावनि॥
अति प्रिय मोहि वहाँ के वासी।
मम-धामदा पुरी सुखरासी॥

जिस प्रकार हम लोग कुछ समय निकाल कर अपने घर की उन्नति और कुटुम्बियों की सेवा करते हैं, उसी प्रकार हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने देश की उन्नति और अपने देश भाइयों की सहायता करें। जो लोग विद्वान हैं वे अपनी विद्या के द्वारा देश भाइयों का अज्ञान दूर कर सकते हैं। धनवान धन देकर अनाथालय, औषधालय और विद्यालय खुलवाकर दीन दुखियों का दुःख मिटा सकते हैं। जो बलवान हैं वे सेना और पुलिस में भरती होकर विदेशी शत्रुओं से अपने देश की रक्षा कर सकते हैं। योग्य पुरुष राज काज में भाग लेकर देश का उचित प्रबन्ध करने में सहायता पहुँचा सकते हैं। स्त्रियाँ भी अपने देश की बहिनों का उद्धार कर सकती हैं।

जो मनुष्य अपने देश को विपत्ति में फँसा हुआ देखकर उसका दुःख दूर नहीं करता, वह देश द्रोही है। दरिद्रता, रोग और अन्याय से पीड़ित देशवासियों को देखकर जिसका हृदय नहीं पसीजता, उसे देश में सुख-चैन से रहने का अधिकार नहीं। जिसने जन्मभूमि का ऋण न चुकाया, उसका जीवन व्यर्थ है।

---

(६) नशा

ऐसे अनेक मनुष्य हैं जो कई-एक दुर्व्यसनों में फँस जाते हैं। उन दुर्व्यसनों में से एक दुर्व्यसन नशा करना है। कोई कोई मनुष्य समझते हैं कि नशा करने से ध्यान स्थिर होता है और कठिन कार्य भी सरलता से पूर्ण हो जाता है, पर यह भूल है। अज्ञानी लोग नशा नशा के लिये करते हैं, इसलिये वे कभी-कभी अपनी शक्ति से भी अधिक नशा कर लेते हैं, जिसका परिणाम बहुत भयानक होता है।

नशा कई नशीली वस्तुओं के प्रयोग से किया जाता है। उन वस्तुओं में से मुख्य भांग, गाँजा, चरस, अफीम और शराब हैं। इनमें से प्रत्येक वस्तु का उपयोग भिन्न-भिन्न रीतियों से किया जाता है। भांग एक पौधे की सूखी पत्तियों का चूरा रहता है। इसको बारीक पीस कर और शक्कर के साथ पानी में घोलकर तथा कपड़े से छान कर पीते हैं। कोई-कोई भॉग की मिठाई बना कर खाते हैं जिसे माजूम कहते हैं। गॉजा भी एक पौधे की सूखी पत्तियों का चूरा रहता है। इसे लोग चिलम में भर कर पीते हैं। इसका नशा भांग की अपेक्षा अधिक तेज होता है। चरस गांजे के पौधे की गोंद से तैयार किया जाता है। इसे भी गाँजे के समान पीकर इसका उपयोग करते हैं। अफीम का उपयोग खाकर और पीकर, दोनों प्रकार से किया जाता है। मदकी लोग इसकी मदक बनाकर पीते हैं। शराब अन्य मादक पदार्थों से विशेष नशीली होती है। इसमें मतवाला करने की विशेष शक्ति रहती है। इसका उपयोग प्रायः सब स्थानों में अधिकता से किया जाता है।

मादक पदार्थों का उपयोग करने से शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ता है। प्रायः सभी नशीली वस्तुओं में विष रहता है। जब किसी नशीली वस्तु का उपयोग किया जाता है तब उसका रस भोजन के रस में मिश्रित होकर खून पर प्रभाव डालता है, जिससे शरीर में बहुत फुर्ती आ जाती है। नशे के आने पर खून का दौरा

तेजी से होने लगता है और नशा उतरने पर शरीर में सुस्ती छा जाती है। मन किसी काम के करने में नहीं लगता। नशीली वस्तु के उपयोग से शरीर का खून अशुद्ध हो जाता है। इससे मस्तिष्क पर सबसे बड़ा धक्का पहुँचता है और मनुष्य विचार शून्य हो जाता है।

नशे से और भी कई प्रकार की हानियाँ होती हैं। हमेशा पागलपन सा छाया रहता है। शरीर दुर्गुणों का स्थान बन जाता है। स्वास्थ्य खराब हो जाता है और जीवनकाल घट जाता है। धन की बरबादी होती है। सरकार ने मादक चीज़ों का निषेध करने के लिये उनका भाव महँगा कर रक्खा है जिससे लोग नशे का उपयोग अधिक न करें।

अस्वस्थ अवस्था में वैद्य और डाक्टर लोग रोगी की अवस्था के अनुसार औषधि में मादक पदार्थ का मिश्रण देते हैं जिससे स्वास्थ्य सुधर जाता है। कोई लोग अपने चित्त की चंचलता को स्थिर करने के लिये नशा करना ठीक समझते हैं और जिनकी आदत पड़ जाती है उन्हें इससे काम करने में कुछ सुभीता भी हो जाता है, पर उनका शरीर भीतर ही भीतर निर्बल होता जाता है।

तात्पर्य यह है किसी दशा में नशीली वस्तुओं का उपयोग नहीं करना चाहिये, क्योंकि प्रत्येक वस्तु में थोड़ा-बहुत विष रहता है। यदि औषधि के रूप में उसके उपयोग की आवश्यकता हो तो केवल डाक्टर या वैद्य की सलाह से उसका उपयोग किया जावे।

(७) आज्ञा-पालन

प्रत्येक मनुष्य का धर्म है कि वह अपने से बड़े और अधिकारी लोगों की आज्ञा का पालन करे। सत्यता, नम्रता और परोपकार आदि गुणों के समान आज्ञा-पालन भी एक ऐसा गुण है जिससे मनुष्य को लाभ होता है।

आज्ञा-पालन करने में मनुष्य को किसी प्रकार संकोच नहीं करना चाहिये। क्योंकि उसे जो आज्ञा दी जाती है वह उसके

लाभ के लिये होती है। लड़कों का आचरण सुधारने के लिये ही उनके माता-पिता उनको किसी काम के करने की आज्ञा देते हैं। अधिकारी लोग भी जो आज्ञा देते हैं, वह सर्वसाधारण के हित के लिये रहती है। आज्ञा-पालन करने से मनुष्य को इस बात का सन्तोष होता है कि मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा किया। किसी सभा या उत्सव का काम पूर्ण रीति से चलाने के लिये यह बहुत आवश्यक है कि जिसको आज्ञा दी जावे वह उसको अच्छी तरह माने और अपना काम पूरा करे। इसके बिना इस कार्य में सफलता होना असम्भव है।

माता-पिता अपनी सन्तान के हित-चिन्तक होते हैं। माता-पिता जीवन-भर यही चाहते हैं कि हमारे बच्चे सदैव सुखी बने रहें; इसलिये सन्तान का यह कर्त्तव्य है कि वह माता-पिता की आज्ञा माने। विद्यार्थियों को अपने गुरु जी की आज्ञा माननी चाहिये, क्योंकि शिक्षक लोग अपने शिष्यों की वैसी ही भलाई चाहते हैं जैसी माता-पिता अपने लड़के-बच्चों की। अपने जेठे नातेदारों की भी आज्ञा मानना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है, क्योंकि ये लोग भी अपने सम्बन्धियों की भलाई चाहते हैं। मुहल्ले के सयाने लोग भी जब अपने से छोटी उमर वालों को कोई आज्ञा देते हैं तब उनका भी विचार भलाई का रहता है, इसलिये हम लोगों को अपने से बड़ी उमर वालों की आज्ञा मानने में किसी प्रकार का आगा-पीछा करना उचित नहीं है। हमारे बड़ी उमर वाले मित्र भी हमारे शुभचिंतक होते हैं; इसलिए उनकी आज्ञा-पालन करने से भी हमारा लाभ है।

कभी-कभी इस बात का विचार होता है कि आज्ञा उचित है या अनुचित, पर जो लोग सच्चे मन से आज्ञा देते हैं और जो सच्चे मन से उसे पालन करने की इच्छा करते हैं उनके मन में ऐसी शङ्काएँ नहीं आतीं। उदाहरण के लिये, जब रामचन्द्र जी को बनवास की आज्ञा दी गई तब उन्होंने इस बात का विचार

नहीं किया कि आज्ञा उचित है या अनुचित। उन्होंने उसे पिता की आज्ञा समझ कर उसका हृदय से पालन किया। तुलसीदास जी ने भी कहा है कि—

मात-पिता, गुरु-प्रभु की बानी।
बिनहि विचार करिय शुभ जानी॥

सारांश यह कि आज्ञा पालन करना प्रत्येक विचारवान् मनुष्य का धर्म है और जो आज्ञा सच्चे मन से दी गई है उसका पालन करने में कोई रुकावट न होनी चाहिये। यदि कोई मनुष्य अनुचित आज्ञा देगा तो उसके मन में अवश्य ही पछतावा होगा और वह अपनी आज्ञा को लौटा लेगा। धर्म की तो यहाँ तक आज्ञा है कि आज्ञा के उचित या अनुचित होने का विचार करने से पाप होता है, जैसा रामायण में लिखा है—

उचित कि अनुचित किए विचारू।
धर्म जाय सिर पातक भारू॥

(ख) निबन्ध सिखाने के लिये खंड

(१) मित्रता

(१) भूमिका।
(२) मित्रता से लाभ।
(३) मित्र चुनने की रीति।
(४) मित्र के साथ वर्ताव।
(५) सारांश।

(२) समाचार-पत्र

(१) भूमिका।
(२) समाचार-पत्रों के विषय।
(३) समाचार-पत्रों का उपयोग।
(४) समाचार-पत्रों से लाभ।
(५) समाचार-पत्रों की योग्यता।

(६) समाचार-पत्रों से हानि।

(३) जन्म-भूमि

(१) भूमिका।
(२) जन्म-भूमि का अर्थ।
(३) जन्म भूमि के प्रति प्रेम।
(४) जन्म-भूमि की सेवा।
(५) सारांश।

(ग) निबन्ध लिखना सिखाने की रीति

विचारात्मक निबन्धों की रचना सिखाने के लिए शिक्षक तथा शिष्य के पास विचारों की सामग्री का होना बहुत आवश्यक है। ये विचार पढ़ने-सुनने, सोचने और किसी वस्तु का अवलोकन करने से उत्पन्न हो सकते हैं। इन विचारों को लेख में परिणत करने के लिए यह आवश्यक है कि उनके खण्ड कर लिए जायँ। यह काम या तो विद्यार्थियों के लिए॰ शिक्षक कर देवे अथवा आवश्यकता होने पर विद्यार्थी शिक्षक की सहायता से उसे स्वयं करें। इसके पश्चात् विद्यार्थी खण्डों के अनुसार लेख लिखने का अभ्यास करें। कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है कि जो-जो विचार मन में आते जावें, एकत्र लिख लिए जावें, और फिर उनका वर्गीकरण कर लिया जावे। किसी भी अवस्था में रचना पहले कच्ची और फिर पक्की की जावे। यह एक स्वाभाविक रीति है, क्योंकि बिना विशेष प्रकार की योग्यता के कोई भी लेखक एक ही प्रयत्न में पूरा और शुद्ध लेख नहीं लिख सकता। कच्चे लेख में विचार प्रकट करते समय लेखक को इस बात की चिन्ता न करनी चाहिये कि सब विचार क्रम-पूर्वक हैं या नहीं क्योंकि विचारों का क्रम लेख को दुहराते समय ठीक कर लिया जा सकता है।

विषय का प्रत्येक खण्ड एक अलग अनुच्छेद में लिखा जावे

और इस बात का ध्यान रहे कि उसमें दो एक वाक्य ऐसे अवश्य रहें जिनसे उसके विषय का पता लग जावे। वाक्य भी बहुत ही छोटे अथवा बहुत बड़े न हों और प्रत्येक वाक्य के अन्त में पूर्णविराम लगाया जावे।

लेख की भाषा ऐसी न हो जिसमें पढ़ने वाले को उसका अर्थ समझने में कठिनाई हो। अनजाने और अप्रचलित शब्दों का उपयोग अनुचित है। वाक्य इतने बड़े न हों कि उनका अर्थ और सम्बन्ध जताने के लिये पढ़ने वाले को उन्हें कई बार पढ़ना पड़े। लेख में असम्भव अथवा असंगत बातें भी न लिखनी चाहिये।

पक्की रचना का संशोधन करना शिक्षक का काम है। संशोधन में शिक्षक को सदैव इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि संशोधन बहुत ही कम किया जाय। अधिक संशोधन से लड़कों का उत्साह घट जाता है। यदि विद्यार्थी ने कुछ निरर्थक बातें भी लिखी हों तो भी शिक्षक को अपनी चतुराई से एक-आध स्थान में ऐसा संशोधन कर देना चाहिये जिससे उसमे सार्थकता आ जावे। संशोधन-भूलों को फिर से शुद्ध-रूप से लिखना विद्यार्थी का कर्त्तव्य है। यदि लेख में बहुत अधिक संशोधन किया हो तो विद्यार्थी को उसे फिर से शुद्ध रूप मे लिखना चाहिये।

अभ्यास (६)

(१) नीचे लिखे विषय-खडों के आधार पर विद्यार्थी विचारात्मक निबन्ध लिखें।

(क) व्यायाम (कसरत)

(१) भूमिका।
(२) व्यायाम के भेद।
(३) समय, स्थान और सावधानी।
(४) व्यायाम से लाभ और हानि।
(५) सारांश।

(ख) विद्यार्थियों के कर्त्तव्य

(१) भूमिका।
(२) आत्मगत कर्त्तव्य।
(३) सदाचार।
(४) बड़ों के प्रति कर्त्तव्य।
(५) कर्त्तव्य पालन में कठिनाई।

(ग) स्त्री-शिक्षा

(१) आवश्यकता।
(२) लाभ।
(३) हानि।
(४) विरोध।
(५) शिक्षा के उपयोगी विषय।
(६) सारांश।

(ग) विद्यार्थी स्वयं खंड बनाकर नीचे लिखे विषयों पर लेख लिखें :—

(१) मांसाहार (२) जाति-भेद (३) नगर-वास (४) सत्संग। (५) आरोग्यता। (६) नम्रता (७) स्वावलम्बन।

सातवाँ परिच्छेद

कुछ विशेष प्रकार के पत्र

(१) निमन्त्रण पत्र

॥ श्रीः ॥

मंगल-भवन पधारिये, गणन-सहित गणराज।
सिद्ध-बुद्धि दायक स्वयं, सिद्ध करहु मम काज॥

श्रीमान्..

ईश्वर की कृपा से चिरंजीव ओम् प्रकाश का उपनयन संस्कार ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया, सम्वत् १९८६ (ता० १०—६ - १९२९) सोमवार को निश्चत हुआ है।

इस कारण आपसे निवेदन है कि आप सकुटुम्ब और इष्ट-मित्रों सहित पूर्वोक्त तिथि को ८ बजे प्रातःकाल इस शुभ कार्य में सम्मिलत होने की कृपा कीजिये।

सराफा बाजार, मऊ, } आपका दर्शनाभिलाषी

ता० ८। ६। १९२९ } रामहरी शुक्ल

(२) मानपत्र

परम माननीय पं० मदन मोहन मालवीय जी
बी० ए० एल० एल० बी०
वाइस-चान्सलर हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस की
सेवा में सादर समर्पित।

मान्यवर महोदय,

जबलपुर नगर की यह पुरानी संस्था हितकारिणी सभा, आपके यहाँ पधारने पर आपका स्वागत सच्चे श्रद्धापूर्ण हृदय से करती है। इस सभा का प्रधान कार्य इस नगर तथा आस पास के स्थानों में शिक्षा प्रसार है। कस्तूरचन्द्र हितकारिणी सभा हाई स्कूल, जिसके भवन में आपने आज पदार्पण किया है, इसी सभा द्वारा गत ४५ वर्षों से संचालित हो रहा है। आप भी शिक्षा-हितैषी हैं. इसलिए यह सभा आपका सत्कार करना अपना कर्त्तव्य समझती है।

महानुभाव, आपका निरत उद्योग एवं अहर्निश अध्यवसाय इस भारतवर्ष की हिन्दी जनता पर भली भाँति प्रकट है। आप परोपकारमूर्ति हैं। संसार के अधिकांश प्राणी अपने-अपने व्यवसाय में लगे रहना ही अपना पुरुषार्थ समझते हैं। यह नीति

आपकी नहीं है। देश-सेवा में स्वव्यवसाय को बाधक होते देख आपने उसे एक तुच्छ पदार्थ के समान त्याग दिया है और हिन्दू जाति तथा जननी जन्मभूमि की सेवा में आप जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आपका यह अलौकिक चरित हमारे तथा इस देश की भावी सन्तान के लिए आदर्श रूप है।

श्रीमान्, आपने जो कार्य कर दिखाया है और अब भी आप जिसकी पूर्ति के लिए स्वास्थ्य की चिन्ता न करते हुए सदा प्रयत्न करते हैं, वह हम लोगों के लिए एक उज्ज्वल दृष्टांत है। पहले भी अपनी जन्म-भूमि प्रयाग में आपने उद्योग करके एक विशाल हिन्दू छात्रालय बनवा दिया है जिससे न जाने कितने विद्यार्थी सुविधापूर्वक उच्च शिक्षा प्राप्त कर निकल गये और निकलेंगे। काशी का हिन्दू विश्वविद्यालय तो सदा आपकी सत्कीर्ति का स्मरण-चिन्ह बना रहेगा। इस महत्कार्य को सुचारु-रूप से सम्पन्न कर आपने हम सब हिन्दुओं को कृतज्ञता के पाश में बाँध लिया।

महाशय, आप धर्म-नीति-शिक्षा के पक्षपाती हैं। हितकारिणी सभा का भी यही विश्वास है कि इस प्रकार की शिक्षा के अभाव में निरी मानसिक शिक्षा अधूरी है; अतएव इस विश्वविद्यालय में प्रतिदिन आधे घंटे शास्त्रानुकूल आचार-नीति-शिक्षा दी जाती है। साथ ही हमने मातृ-भाषा को शिक्षा का माध्यम भी स्वीकार किया है। आप तो सदा मातृ-भाषा प्रेमी रहे हैं और प्रथम हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के सभापति हैं।

महोदय, अब हम आपका अधिक समय न लेंगे। हम इतना जोर देकर कहना चाहते हैं कि आपके यहाँ पधारने से हम अपने को कृत-कृत्य समझते हैं। अब आपसे यह नम्र निवेदन है कि आप हमारे इस मानपत्र को स्वीकार करने की कृपा करें।

जबलपुर
ता० १०-८-२६

भवदीय कृपाभिलाषी
सभापति
उपसभापति
मन्त्री
उपमन्त्री

(३) विज्ञापन

"सहेली"
स्त्रियों के वास्ते अद्वितीय
सचित्र मासिक पत्र
जिसका सम्पादन
स्त्रियों द्वारा होता है
सम्पादिकाएँ—रूप कुमारी बांचू और दया दर
मूल्य २॥) छमाही
आप स्त्रियों के पास विज्ञापन
"सहेली" ही के द्वारा पहुँचा सकते हैं
इलाहाबाद ला जर्नल प्रेस
इलाहाबाद

(४) रसीद

मैं रामकृष्ण, वल्द श्रीकृष्ण, जाति बढ़ई, अहियापुर प्रयाग का निवासी हूँ। जो कि मैंने बाबू देवकीनन्दन ठेकेदार, कीटगंज, प्रयाग निवासी से दस कुरसियों के दाम ५) (पाँच रुपये) प्रति कुरसी के हिसाब से ५०) (पचास रुपये) पाये इसलिये यह रसीद लिख दी कि सनद रहे और समय पर काम आवे। इति

स्थान—कीटगंज, प्रयाग। ता० १।६।३५ द० रामकृष्ण

(५) नोटिस

केदारनाथ दुबे, लाहौरी टोला, बनारस की ओर से ।
पं० कृष्णदत्त त्रिपाठी, चौक, लखनऊ के नाम ।

जो कि आपने ता० १५-७-२७ को मेरे यहाँ से ५००) (पाँच सौ रुपये) १) (एक रुपया) सैकड़ा माहवारी ब्याज की दर से कर्जा लिये थे और इस रकम को ब्याज समेत ३ वर्ष के भीतर पटाने का इकरार किया था, पर आज तक मूल या ब्याज कुछ भी नहीं पटाया इसलिए आपको सूचना दी जाती है कि आप ब्याज समेत हमारे रुपये इस नोटिस के पहुँचने की तारीख से १५ दिन के भीतर ही पटा देवें। और हमसे रुपये की रसीद ले लेवें। अगर नोटिस की मियाद के भीतर आप रुपया न पटावेंगे तो आप पर नालिश की जावेगी और अदालत खर्चे के देनदार होंगे। इति ।

स्थान-लाहौरी टोला, बनारस। तारीख १५।८।३० हस्ताक्षर—केदारनाथ दुबे।

मुद्रक—मुंशी रमजानअली शाह, नेशनल प्रेस प्रयाग—५ म ८५२